छह बिंदियाँ

लुई ब्रेल की कहानी

जेन बायरेंट, चित्र : बोरिस कुलीकोव, हिंदी : विदूषक

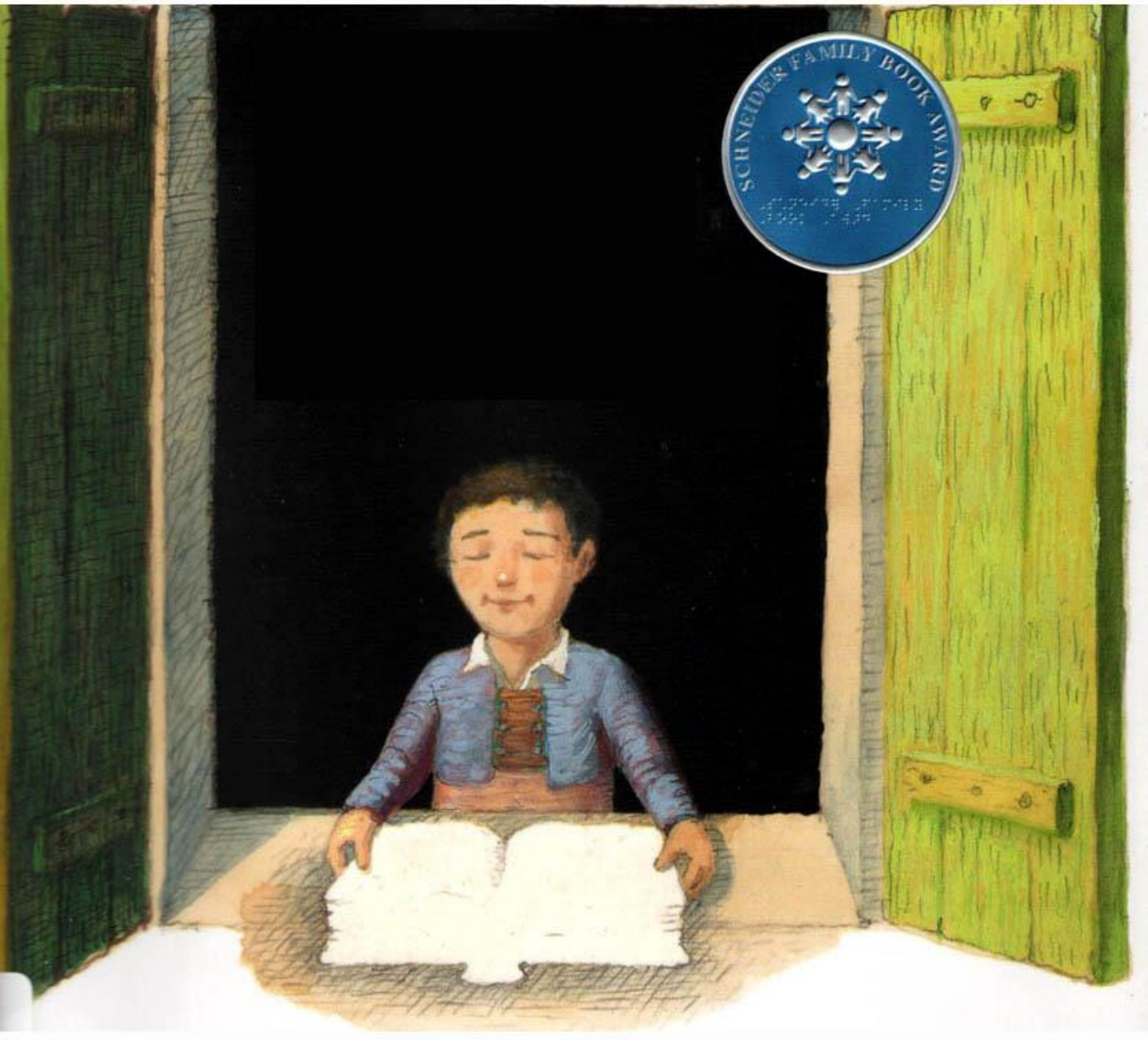

लुई ब्रेल सिर्फ पांच साल का था जब उसकी आँख की रोशनी चली गई. वो बहुत होशियार था और अन्य लोगों जैसे ही ज़िंदगी जीना चाहता था. उसकी सबसे ज्यादा रूचि पढ़ने में थी.

पेरिस के अंधशाला में भी उसके लिए कोई किताबें नहीं थीं.

इसलिए उसने खुद के लिए एक नई वर्णमाला रची. इस प्रणाली में वो आँखों से नहीं, बल्कि किताब को उँगलियों के पोरों से छूकर पढ़ सकता था. उसकी प्रणाली इतनी क्रांतिकारी थी कि आज भी नेत्रहीन लोग उसका इस्तेमाल करते हैं.

इस प्रेरक कहानी में जेन बायरेंट और बोरिस कुलीकोव ने एक ऐसे शख्स की जीवनी बयां की है जो नेत्रहीनों के जीवन में रोशनी की एक किरण लाया और जिसने दुनिया भर के नेत्रहीनों को पढ़ना सिखाया.

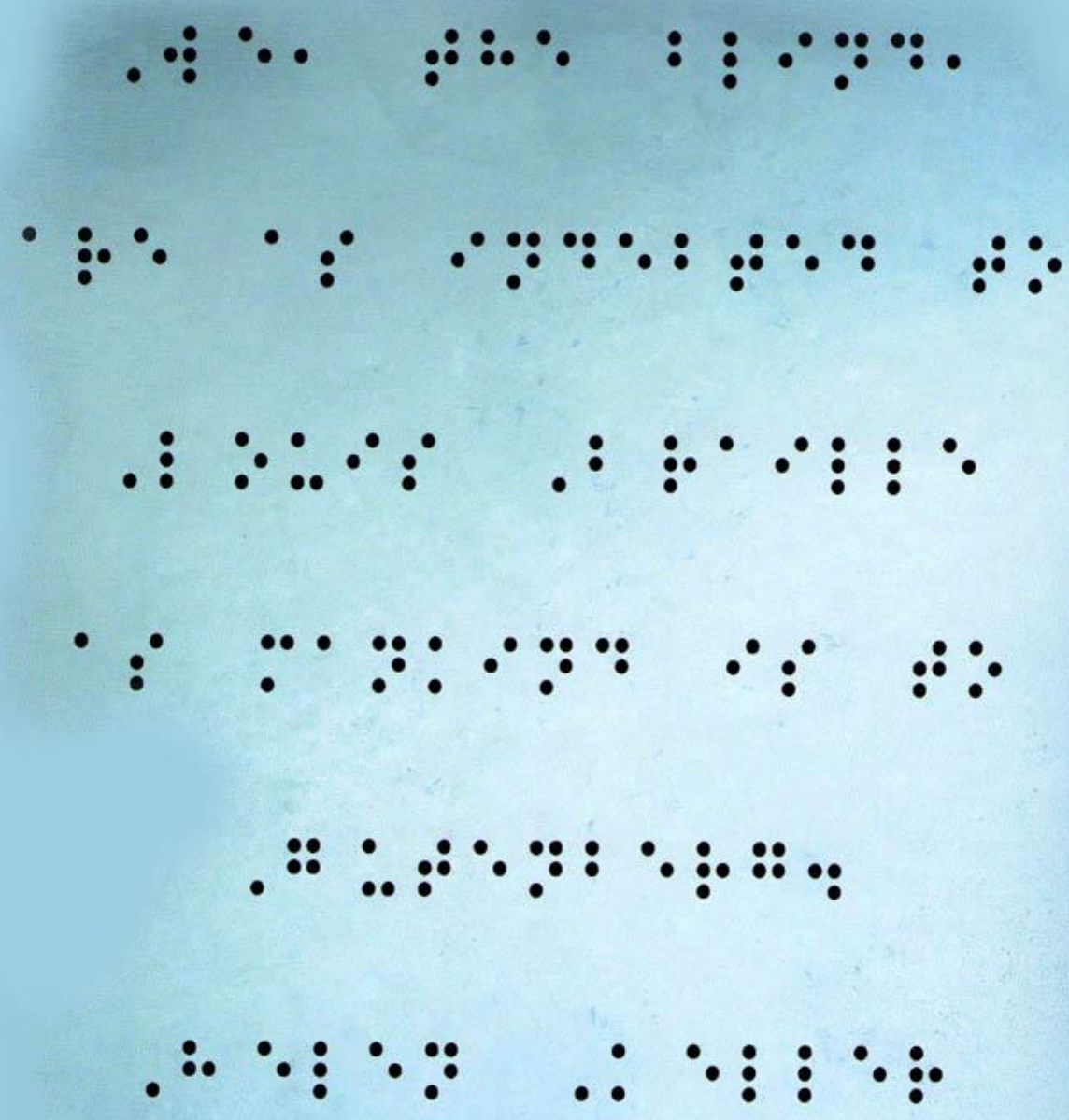

"We, the blind, are as indebted to Louis Braille as mankind is to Gutenberg." –*Helen Keller*

"हम नेत्रहीन, लुई ब्रेल के उतने ही ऋणी हैं,
जितनी इंसानियत गुटेनबर्ग की है." – हेलेन केलर

THE BRAILLE ALPHABET ब्रेल लिपि

a b c d e f g h i

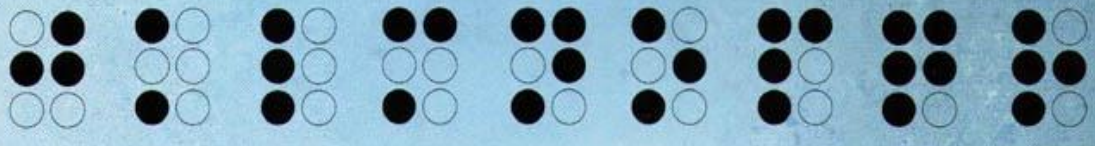

j k l m n o p q r

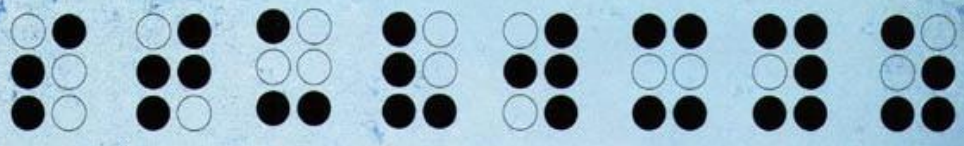

s t u v w x y z

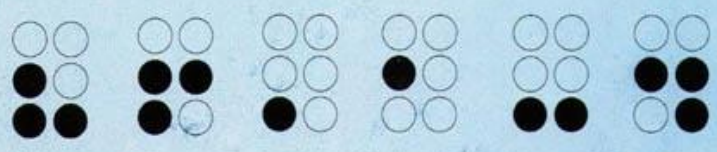

? ! ‘ , - .

capital

The capital sign placed before a letter makes it a capital letter.

अक्षर के सामने यह “कैपिटल चिन्ह” उसे कैपिटल बना देता है.

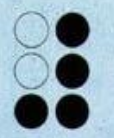

number

The number sign placed before the letters a–j makes the numbers 1–9 and 0.

अंक चिन्ह

जिस दिन मैं पैदा हुआ उस दिन पापा ने सारे गाँव के लोगों से कहा: “यह मेरा बेटा है लू-वी!” पड़ोसियों की जुबान चली. उन्होंने फुसफुसाया:

“बहुत छोटा है. ज़िन्दा नहीं बचेगा!”

पर मैं ज़िन्दा रहा. बचपन में मैं बहुत उत्सुक था और मेरी आँखें हर चीज़ को बहुत बारीकी से देखती थीं. माँ का प्यारा चेहरा, मेरे पालने से झूलती झालर, खाने की मेज़ पर रखी डबलरोटी का आकार. मैं हर चीज़ को बहुत ध्यान से देखता था.

धीरे-धीरे मैं बड़ा हुआ – एकदम अच्छा और बलवान.
जब मैं अपने भाई की चौड़ी पीठ पर बैठकर
बेकर की दुकान पर जाता या अपनी बहनों के साथ
मिलकर मुर्गियों को चुग्गा डालता,
तो गांववाले मुस्कुराते और हाथ हिलाते.
“कितना सुन्दर है!” वो कहते.

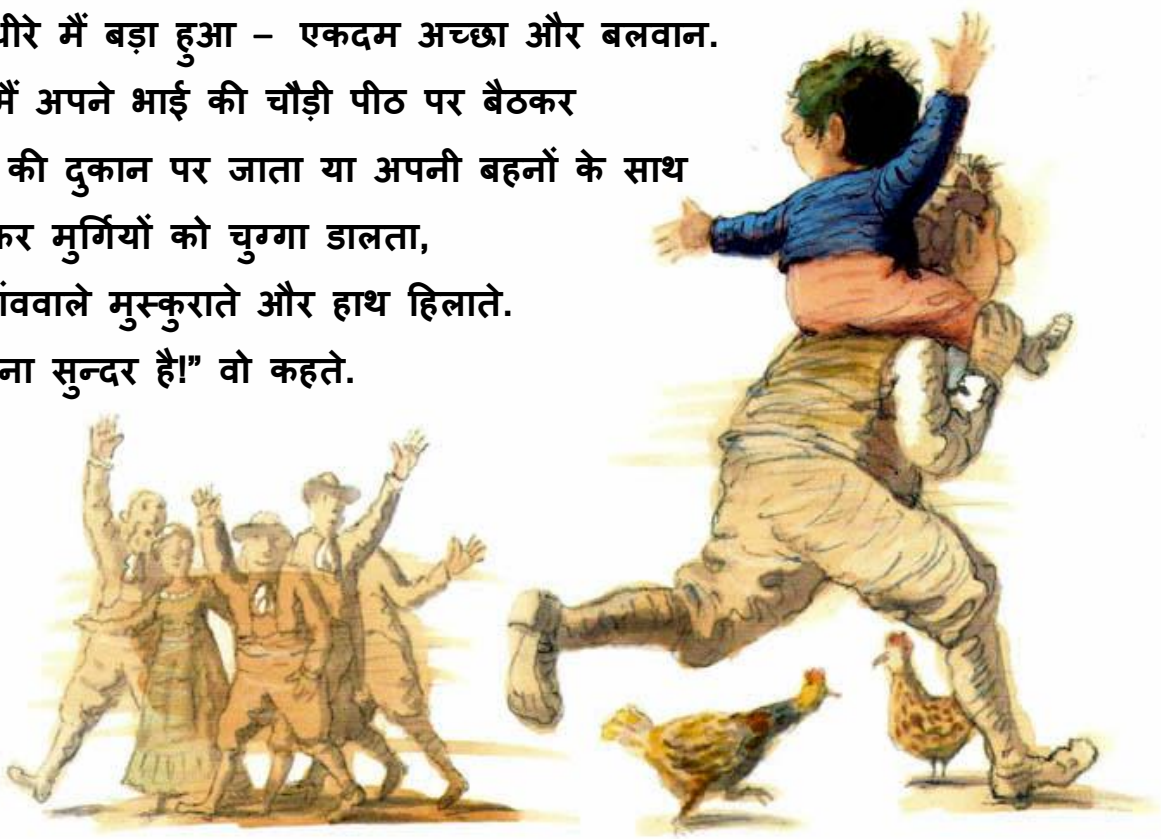

“और होशियार भी,” मेरी बहनें कहतीं.

जब मैं तीन साल का हुआ तो मुझे हरेक गांववाले का नाम याद था. मैं बहन की टोकरी में रखे अण्डों को गिन सकता था. मैं पेड़ पर बैठी गौरईयों को भी गिन सकता था.

मैं जो भी कहानी सुनता – मैं उसका एक-एक शब्द दोहरा सकता था.

पर जो कुछ पापा करते, उसे देखने में मुझे सबसे ज्यादा मज़ा आता था.

लोग दूर-दूर से पापा के पास घोड़ों की जीन बनवाने आते.

या फिर चमड़े की लगाम की मरम्मत करवाने आते.

पापा के हाथ में जादू था – वो सख्त-से-सख्त चमड़े की पट्टियों से भी, चिकनी और उपयोगी लगाम बना सकते थे.

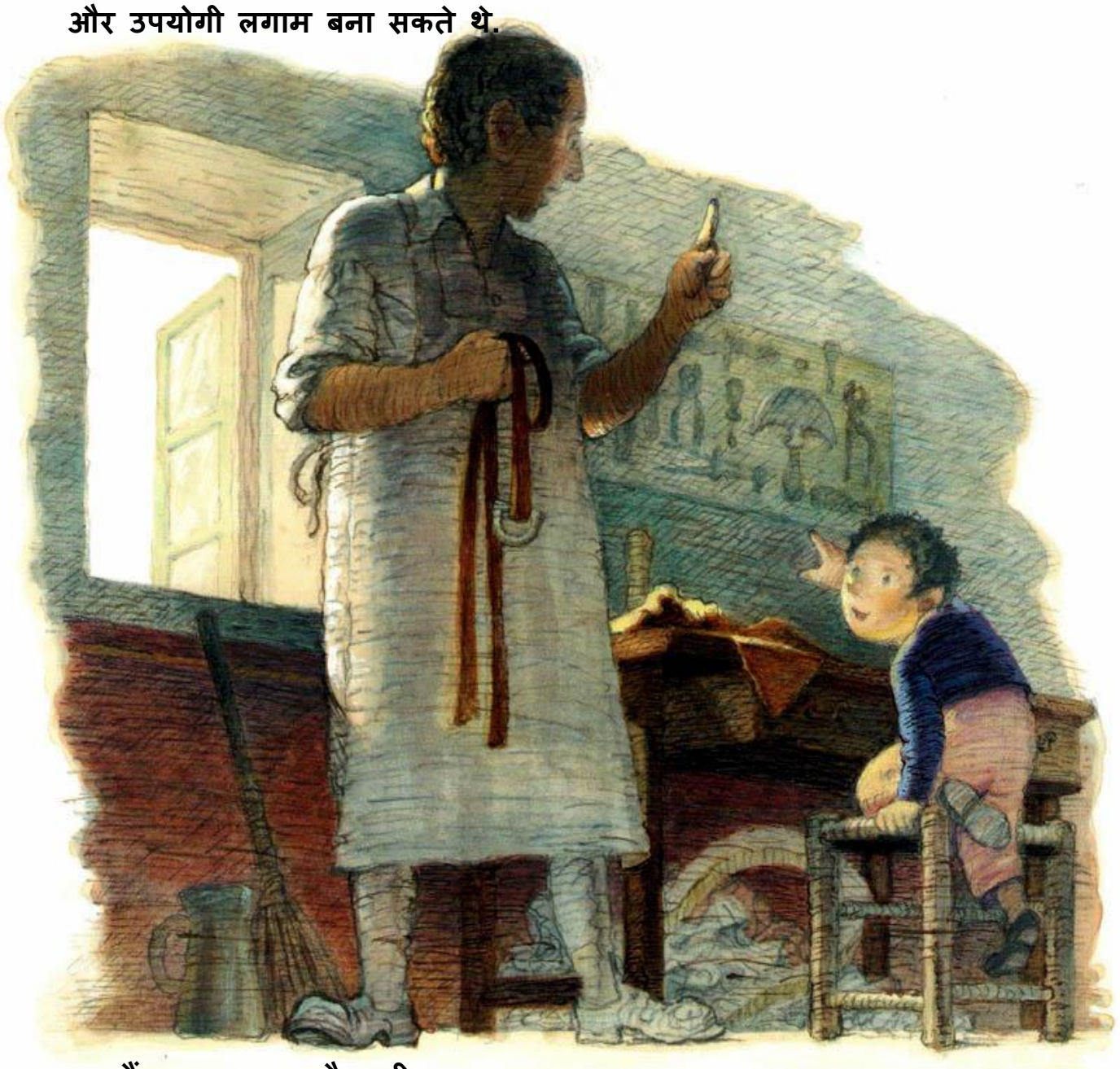

मैं एकदम पापा जैसा ही बनना चाहता था.

जब भी मैं उनके किसी औज़ार को छूता ...

तो पापा मुझे डांटते और कहते, “उसे मत छुओ!”

फिर मुझे प्यार से समझाते: “लुई, अभी तुम बहुत छोटे हो.

थोड़ा बड़े होने तक इंतज़ार करो.”

बहुत छोटा ... यह शब्द मुझे अच्छे नहीं लगते थे!
मैं जल्दी-जल्दी बड़ा और बलवान बनना चाहता था.
काश, मैं पापा को अपना हुनर दिखा पाता ...

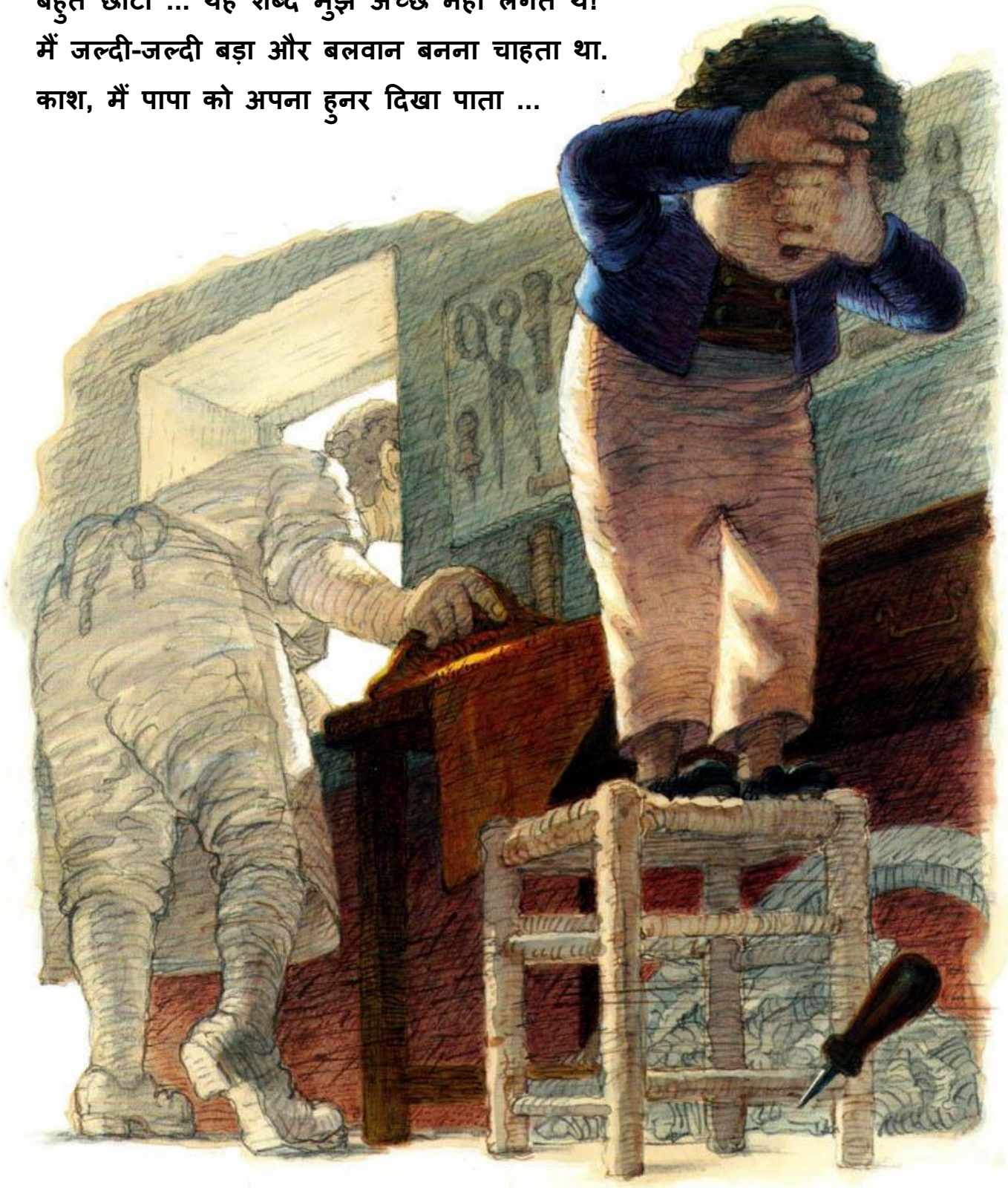

चमड़ा काफी चिकना था. सूजा बहुत नुकीला था.
मुझे सिर्फ यह चिल्लाना आता था –
“पापा! पापा!!! पा पा .....!”

उस दिन मेरी ज़िन्दगी हमेशा के लिए बदल गई.

एक नर्स ने मेरी आँख पर पट्टी बाँधी.

मुझे दुबारा सुनाई पड़ा: “मत छुओ!”

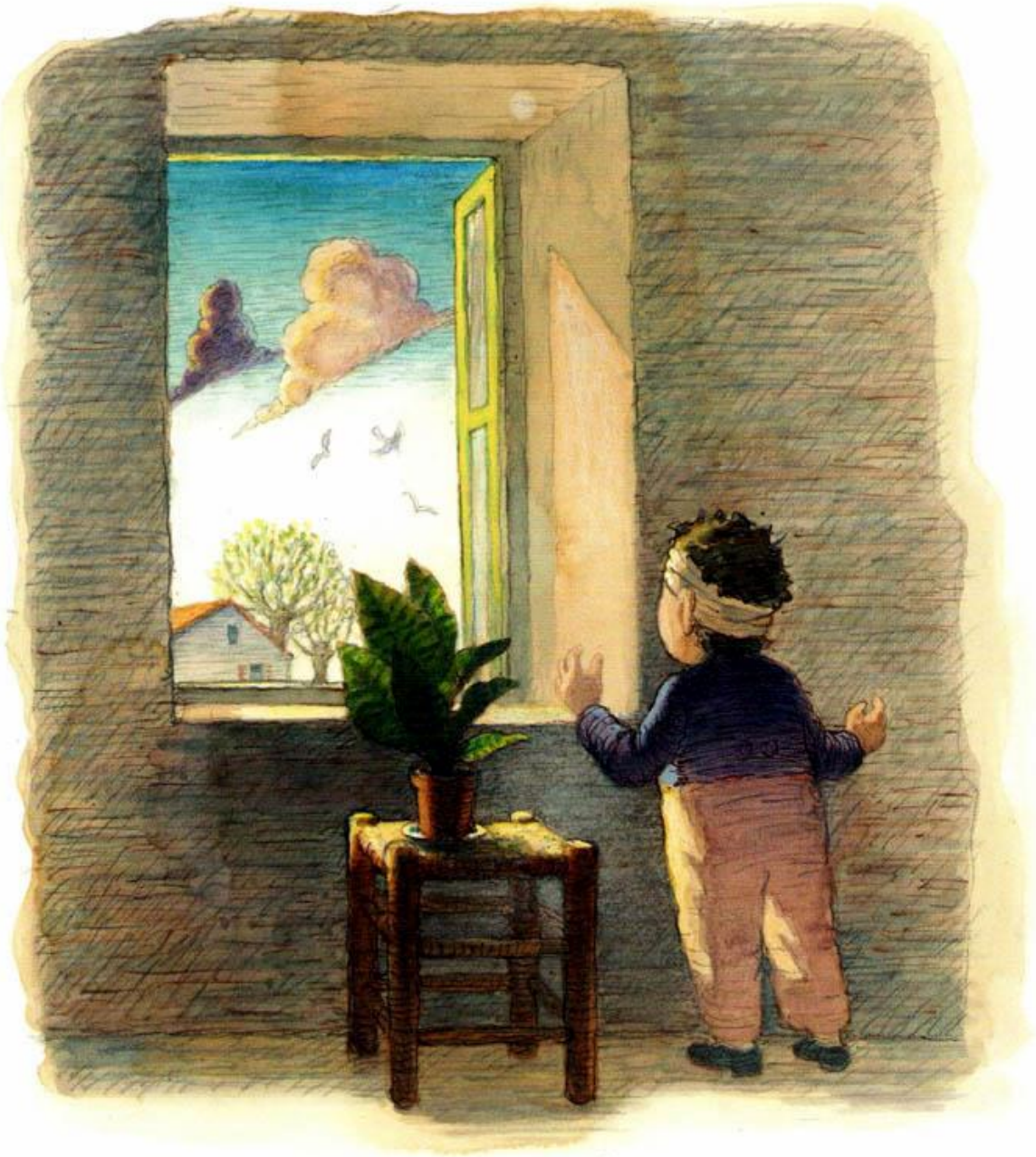

मेरी आँख में ज़बरदस्त खुजली थी!

मेरे हाथ, पेड़ों की गौरईयों जैसे, बहुत छोटे और तेज़ थे. मैं उन्हें आँखों से दूर नहीं रख सकता था.

मैं अपनी तबियत को और ख़राब नहीं करना चाहता था. पर – मैंने वही किया.

खुजलाने से रोग, दूसरी आँख में भी फ़ैल गया. अंत में ...

... अँधेरा छा गया - मैं कुछ भी नहीं देख सकता था. न पेड़, न गौरैये, न चेहरा, न झालर और न ही डबलरोटी.

पांच साल की उम्र में मैं पूरी तरह अँधा था.

गाँववाले फुसफुसाने लगे : "बेचारा लुई ब्रेल!
कितना होशियार बालक था.
अब उसका क्या होगा?"

मेरी दुनिया अब काली, स्याह और खतरों से भरी थी.

घर में धीरे-धीरे चलने के बावजूद मैं फिर भी कुर्सियों, दीवारों और दरवाजों से टकराता था.

मेरा शरीर दर्द करता था.

"कहाँ है सूरज?" मैंने रोते-रोते पूछा.

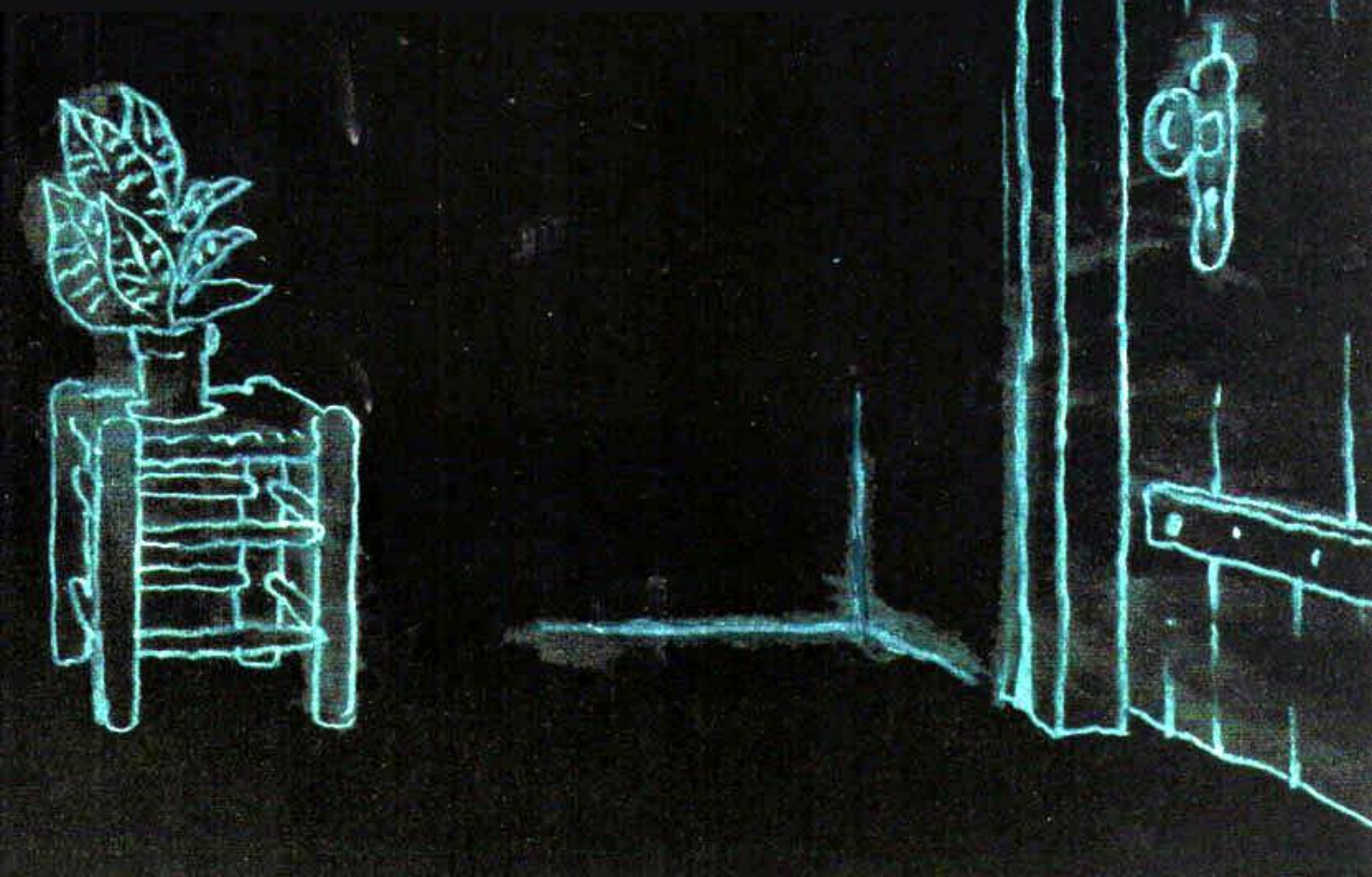

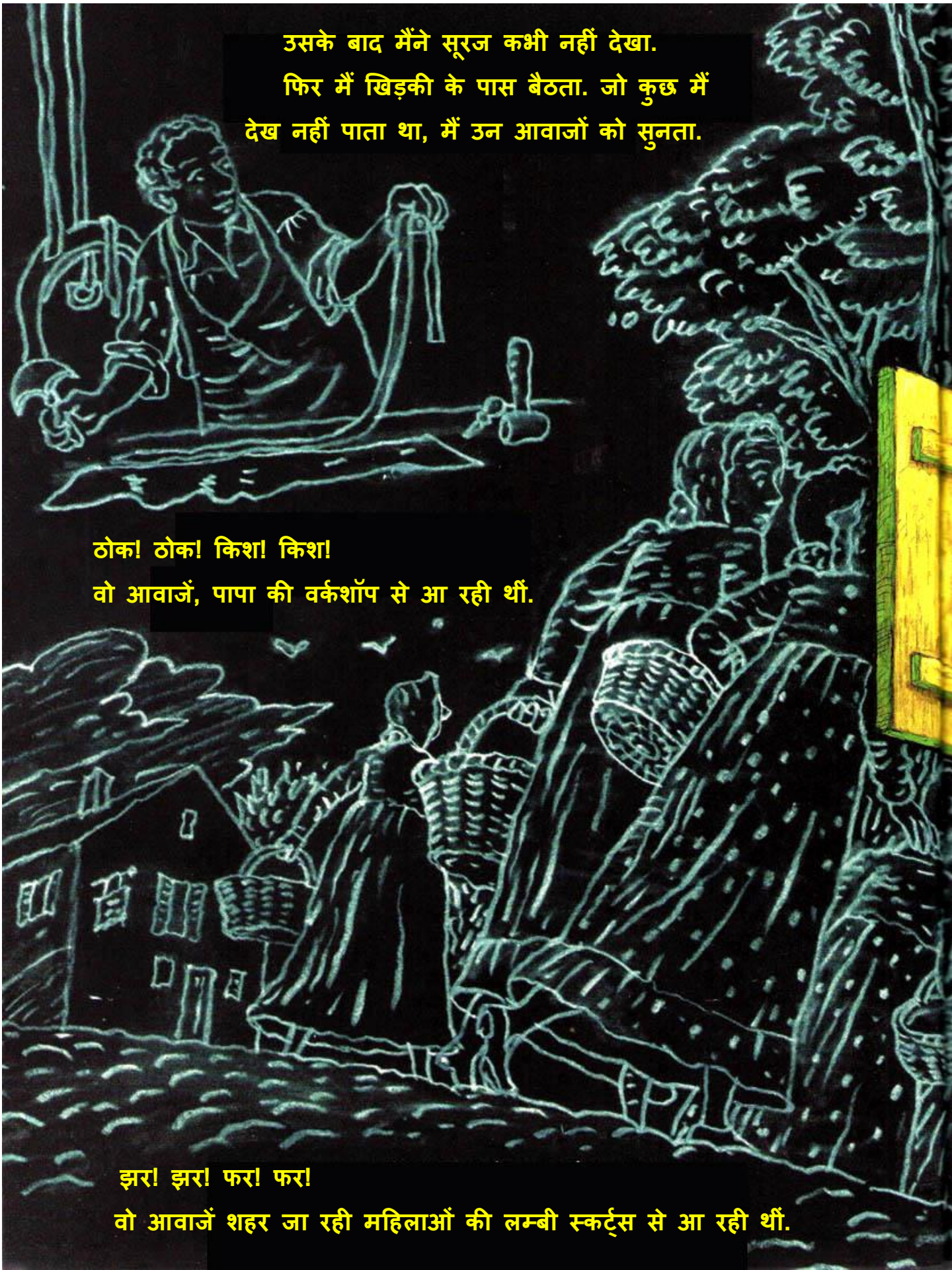
उसके बाद मैंने सूरज कभी नहीं देखा.
फिर मैं खिड़की के पास बैठता. जो कुछ मैं
देख नहीं पाता था, मैं उन आवाजों को सुनता.
ठोक! ठोक! किश! किश!
वो आवाजें, पापा की वर्कशॉप से आ रही थीं.
झर! झर! फर! फर!
वो आवाजें शहर जा रही महिलाओं की लम्बी स्कर्ट्स से आ रही थीं.

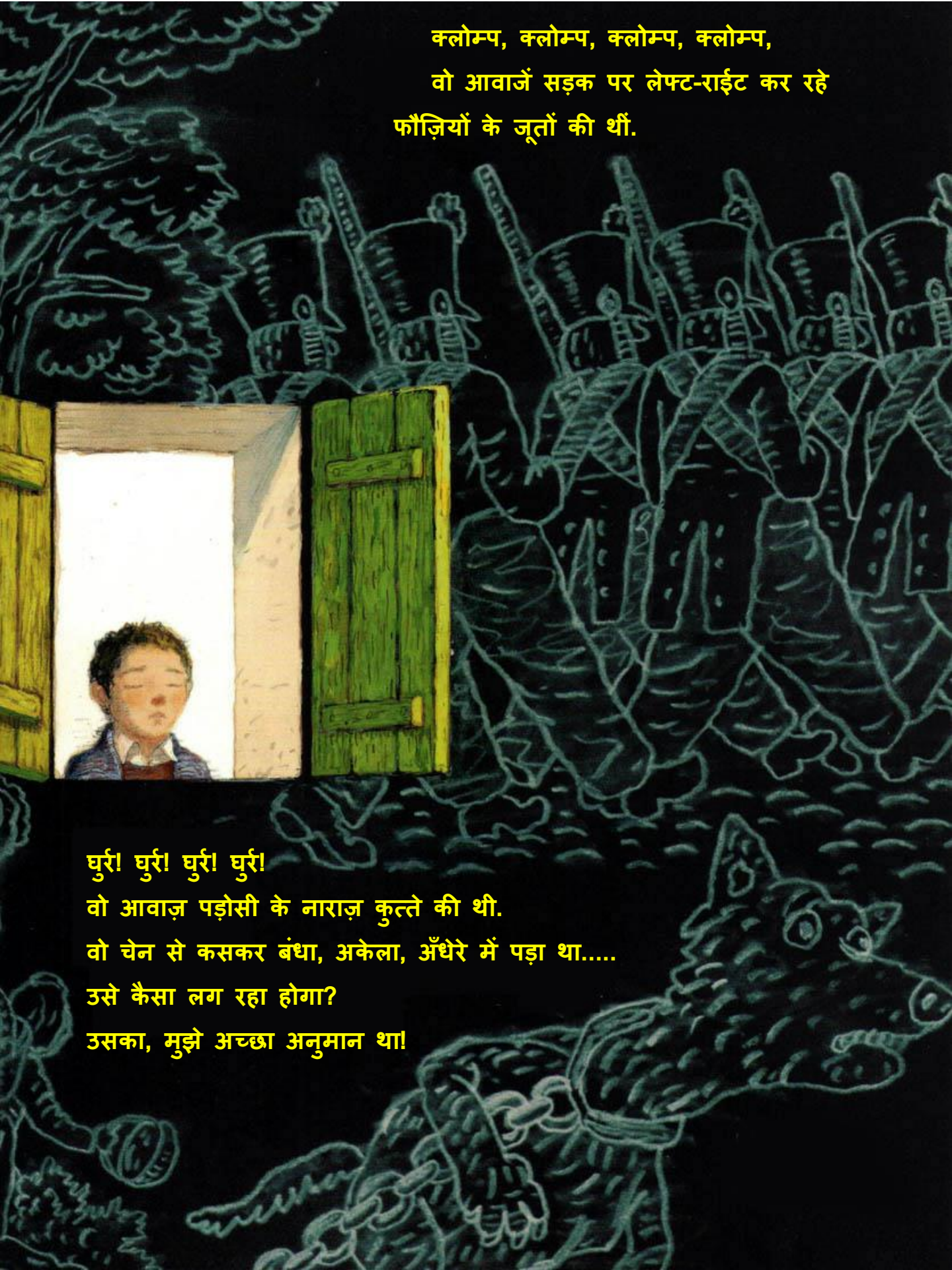
क्लोम्प, क्लोम्प, क्लोम्प, क्लोम्प,
वो आवाजें सड़क पर लेफ्ट-राईट कर रहे
फौज़ियों के जूतों की थीं.
घुर्र! घुर्र! घुर्र! घुर्र!
वो आवाज़ पड़ोसी के नाराज़ कुत्ते की थी.
वो चेन से कसकर बंधा, अकेला, अँधेरे में पड़ा था.....
उसे कैसा लग रहा होगा?
उसका, मुझे अच्छा अनुमान था!

परिवार से जो बन पाया, वो उन्होंने मेरे लिए किया.
पापा ने मेरे लिए लकड़ी की छड़ी बनाई.
हर दिन मैं छड़ी उपयोग करता.
उसे ज़मीन पर थपथपाते हुए कुछ आगे बढ़ता.
मैं घर से बाग़ के बीच की दूरी
को क़दमों से गिनता.
इसी तरह कदम गिनकर मैं –
अंगूर के बाग़, मुर्गियों के दबड़े,
डबलरोटी की दुकान, आटा-चक्की
और पापा की वर्कशॉप की
दूरी पता करता.

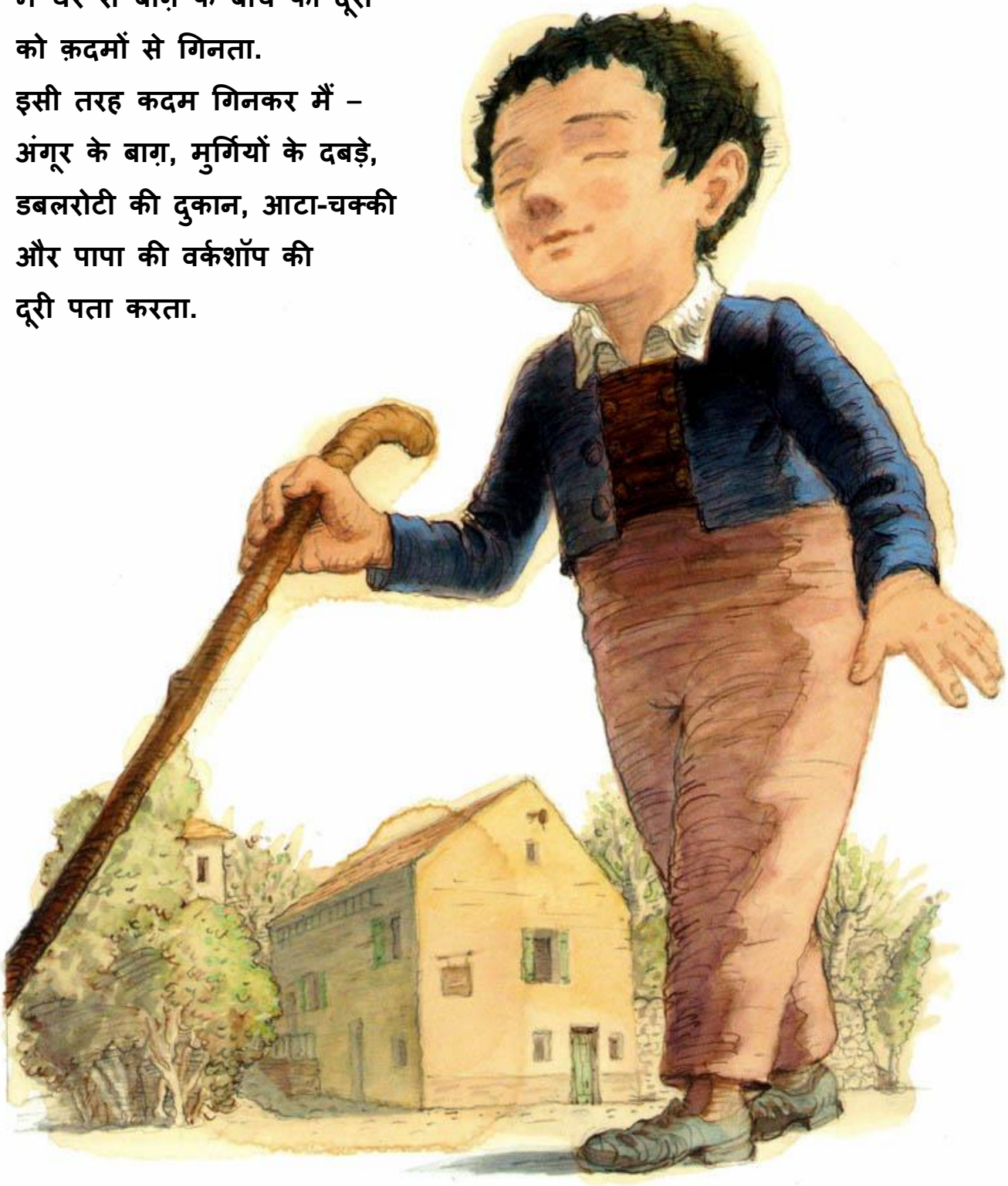

भाई ने मुझे सीटी बजाना सिखाया :
व्रीईईई, व्रीईईई, व्रीईईई,
फिर वो गूंजती आवाज़ मुझे अपने रास्ते
में पड़ी चीज़ों की चेतावनी देती.

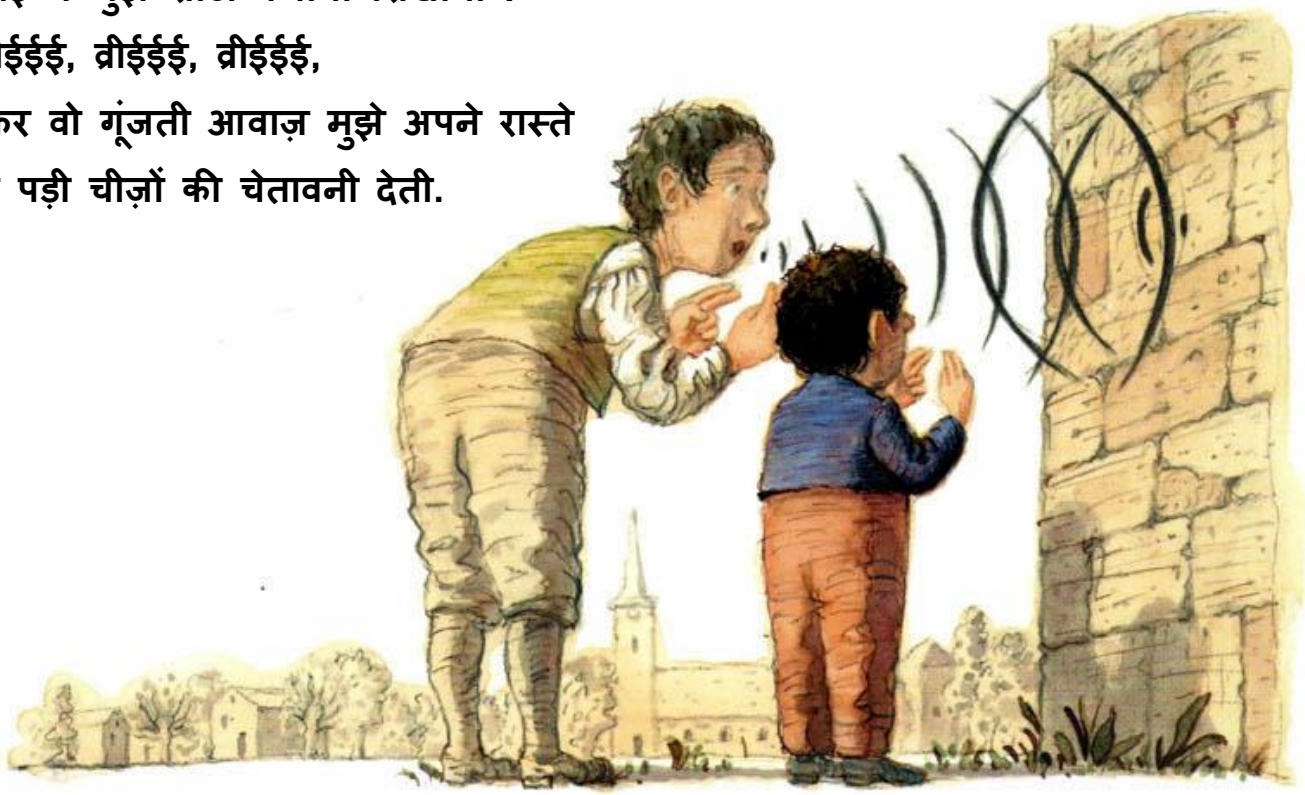

बहन ने मेरे लिए पुआल के अक्षर बनाये.
पापा ने चमड़े की पट्टियों से अक्षर बनाये.
उन्होंने लकड़ी के पटरे पर अक्षरों के
आकार में, गोल-मत्थों वाली पिनें ठोंकी –
जिससे मैं अक्षरों को छूकर पहचान सकूं.

माँ के साथ मैं "डोमिनो" खेलता.
खेल में मैं, उँगलियों से बिंदियाँ गिनता.

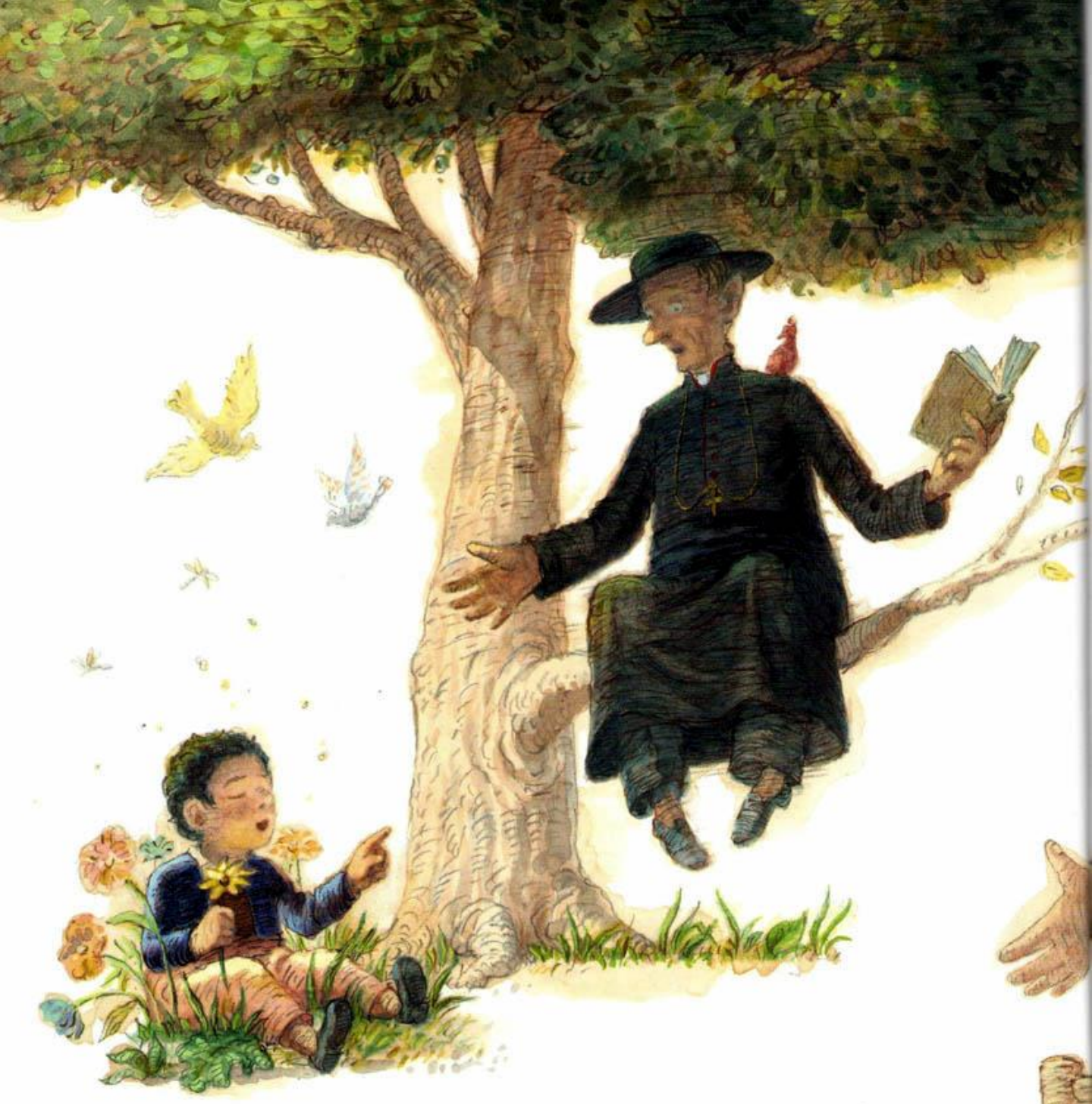

चर्च के पादरी ने मुझे छाल छूकर, पेड़ों को पहचानना सिखाया.
फूल सूंघकर और चिड़ियों को उनके गीतों से पहचानना सिखाया.
वो जब मुझे बाइबिल, या फिर कवितायेँ पढ़कर सुनाते
तो मैं उनकी बातें बड़े ध्यान से सुनता.
“क्या आपके पास अंधे बच्चों के पढ़ने के लिए किताबें हैं?” मैंने पूछा.
“नहीं लुई,” पादरी ने उत्तर दिया. “मुझे माफ़ करना.”

जब मैं थोड़ा बड़ा हुआ, तो गाँव के बाकी बच्चों के साथ मैंने भी स्कूल जाना शुरू किया. पूरे दिन जब बच्चे शब्द और नंबर लिखते, या फिर किताब में से कोई पाठ ज़ोर-ज़ोर से पढ़ते, तब मैं सबसे आगे की लाइन में बैठकर उन्हें सुनता और याद करने की कोशिश करता.

"क्या आपके पास अंधे बच्चों के पढ़ने के लिए किताबें हैं?" मैंने फिर से पूछा.

"नहीं लुई," टीचर ने उत्तर दिया. "मुझे माफ़ करना."

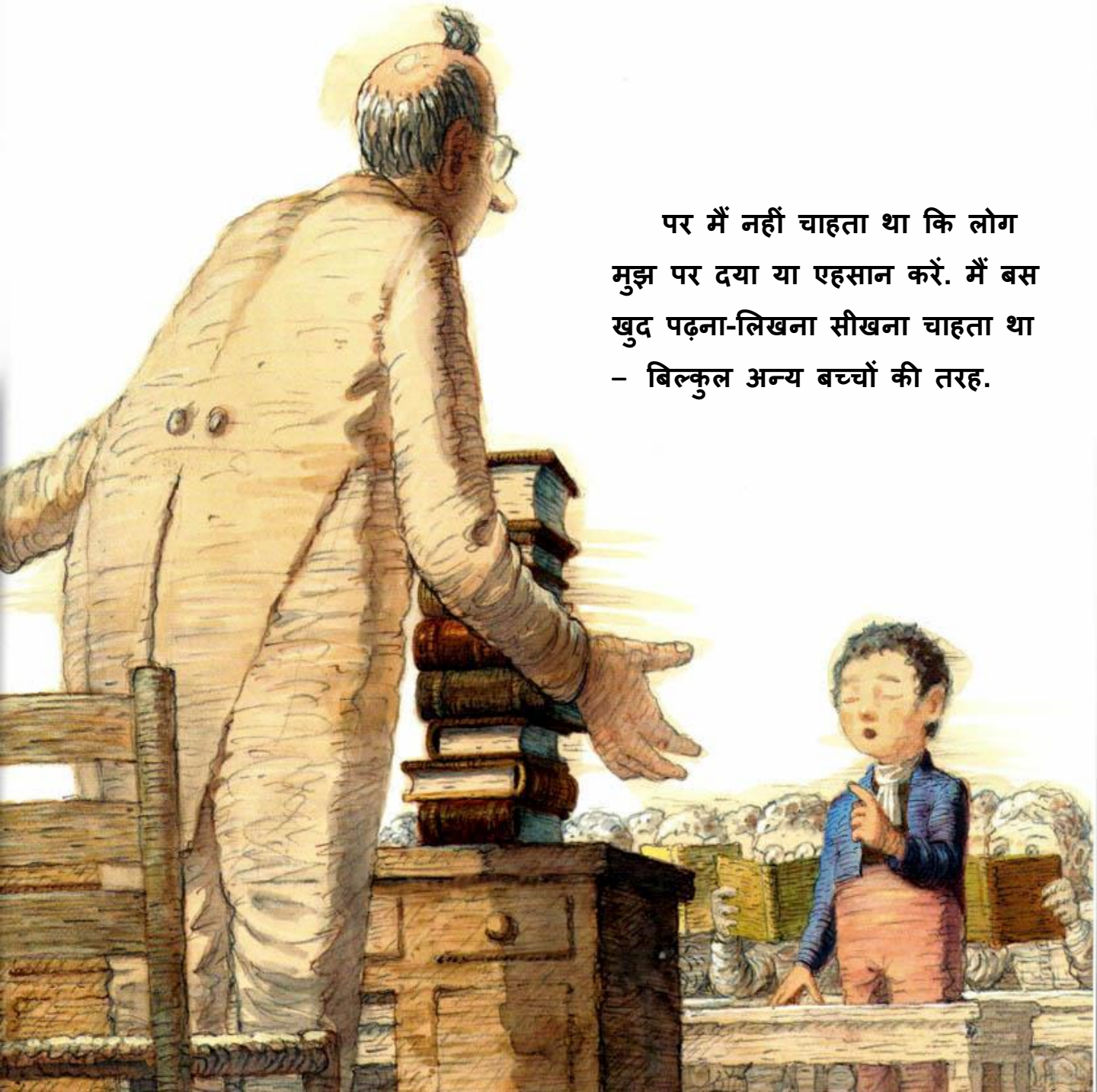

पर मैं नहीं चाहता था कि लोग मुझ पर दया या एहसान करें. मैं बस खुद पढ़ना-लिखना सीखना चाहता था – बिल्कुल अन्य बच्चों की तरह.

एक शाही परिवार की महिला ने मेरे बारे में सुना.
उन्होंने "रॉयल स्कूल फॉर द ब्लाइंड" को एक पत्र लिखकर पूछा –
क्या मैं वहां पढ़ सकता हूँ?
काफी समय बाद उनका जवाब आया. "लुई, तुम्हारा स्वागत है!"

“पादरी कहते हैं वहां अंधे बच्चों के लिए पढ़ने की किताबें भी हैं!” पापा ने उत्तेजित होकर कहा.

“पर तुम तो अभी सिर्फ दस साल के हो!” माँ ने रोते हुए कहा.

“क्या तुम पूरे साल वहां रहोगे?” मेरे भाई ने पूछा.

“पेरिस एक बहुत बड़ा शहर है, बहुत दूर!” बहनों ने मुझे असलियत से आगाह किया.

भला मैं उन्हें कैसे समझाऊँ? किताबों के बिना मैं हमेशा “बेचारा, लुई ब्रेल” बना रहूँगा. मैं हमेशा फिसड्डी बना रहूँगा – बिल्कुल अँधेरे कमरे में, लोहे की ज़ंजीर से बंधे कुत्ते की तरह.

“मैं आपसे बेहद प्यार करता हूँ.” अंत में मैंने उनसे कहा.

“पर अब मुझे जाना ही होगा.”

मुझे जल्द ही पता चल गया कि पेरिस का रॉयल स्कूल, कोई राजमहल नहीं था.
इसके लिए मुझे आँखों की ज़रुरत नहीं थी.
मेरा सख्त पलंग, एक भीड़-भाड़ और नमी वाले कमरे में पड़ा था.
वहां की यूनिफार्म मेरे शरीर को काटती थी. खाना कम और ठंडा होता था.
टीचर, बड़े कड़क और सख्त थे. बड़े लड़के चिढ़ाते और चोरी करते थे.
वहां मुझे घर की, बेहद याद सताती थी!

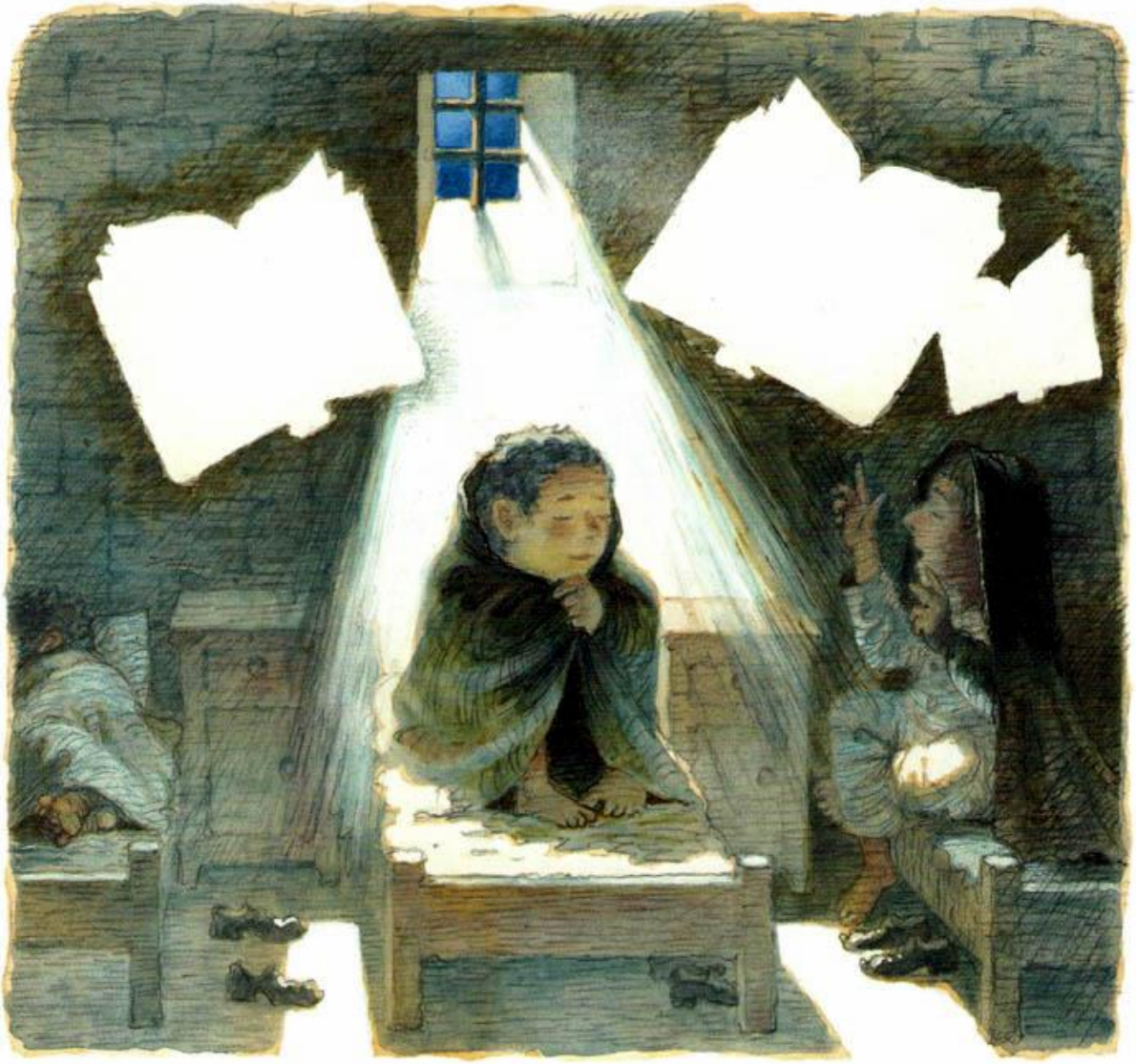

फिर भी मैं वहां टिका रहा. मैं वहां इसलिए टिका रहा क्यूंकि उस पुरानी, फफूंद वाली इमारत में कहीं पर अंधे बच्चों के पढ़ने के लिए किताबें थीं.

"सबसे अच्छे छात्रों को ही उन किताबों को पढ़ने की इजाज़त मिलती है," मेरे दोस्त गेब्रियल ने मुझे बताया.

"तब मैं एक अच्छा छात्र बनने की कोशिश करूंगा," मैंने जवाब दिया.

ब्लाइंड स्कूल की पढ़ाई, बिल्कुल मेरे गाँव के स्कूल जैसी ही थी.
हम चुपचाप बैठे बस सुनते रहते थे. हम चीज़ें रटते और उन्हें दोहराते थे.
संगीत की क्लास के बाद हम वर्कशॉप में जाकर चप्पलें बनाना सीखते थे.
पियानो के बटन दबाते समय या फिर कपड़े की पट्टियाँ काटते वक्त,
मैं हमेशा किताबें पढ़ने और लिखने का सपना देखता रहता था.

वहां मैंने दिल लगाकर काम किया और जमकर पढ़ाई की. अंत में ...

...वो दिन आया जिसका मुझे कब से इंतज़ार था.

एक गाइड मुझे लाइब्रेरी में ले गया.

“यहाँ बैठा!” उसने आर्डर दिया.

फिर पन्ने पलटने, रगड़ने और घुरघुराने की आवाजें आईं.

फिर कुछ गिरने की आवाज़ आई.

“देखो यह रहा,” उसने कहा.

“इन उभरे हुए अक्षरों पर अपनी उंगली चलाओ.

पन्ने को पूरा करने में मुझे काफी समय लगा.

मैंने हरेक उभरे अक्षर की रूपरेखा पर अपनी उंगली फेरी,

बिल्कुल वैसे ही, जैसे मैंने घर पर पुआल और चमड़े के अक्षरों के साथ किया था.

पर यह मोम के बने अक्षर, बहुत बड़े आकार के थे! एक वाक्य से ही, आधा पन्ना भर जाता था! फिर एक-दो वाक्यों के बाद, मुझे पन्ना पलटना पड़ा. आगे दो और पन्ने थे.

और फिर किताब ख़त्म हो गई!

“क्या, बस यही है?” मैंने पूछा.

“हाँ, और हैं,” गाइड ने जवाब दिया. “पर वे सब बिल्कुल इसके जैसी ही हैं.”

वहां हरेक शब्द मेरी हथेली जितना बड़ा था!

एक वाक्य, आधा पन्ना खाता था!

मैंने एक लम्बी आह भरी! उस जैसी सौ किताबें पढ़कर भी, मैं कुछ ख़ास नहीं सीखूंगा?

उस रात मैंने खाना नहीं खाया. मैं पलंग पर लेटा रहा. मुझे घर की याद सताने लगी. अंत में जब मेरी आँख लगी, तो मुझे सपने में पड़ोसी का नाराज़ कुत्ता अपनी ज़ंजीर तोड़ते हुए दिखाई दिया. वो दौड़ाता हुआ मेरी तरफ आया. वो प्यार से मेरा मुंह चाटता रहा, और मैं बहुत देर तक खिलखिलाकर हँसता रहा.

“लुई! लुई!” “जल्दी उठो!”

गेब्रियल ने मुझे झकझोर कर उठाया. सुबह हो गई थी.

“हेडमास्टर ने हमें बुलाया है. जल्दी चलो!”

सभी लोग एक बड़े हाल में इकट्ठा हुए थे.

डॉ. पिगनायर ने कहा; “एक फ्रेंच फौजी कप्तान ने, गुप्त सन्देश भेजने के लिए एक नई संकेत-लिपि का आविष्कार किया है. यह संकेत-लिपि, उंगलियों से छूकर पढ़ी जाती है, आँख से देखकर नहीं. हम उस संकेत-लिपि को अपने यहाँ उपयोग करने की कोशिश करेंगे.”

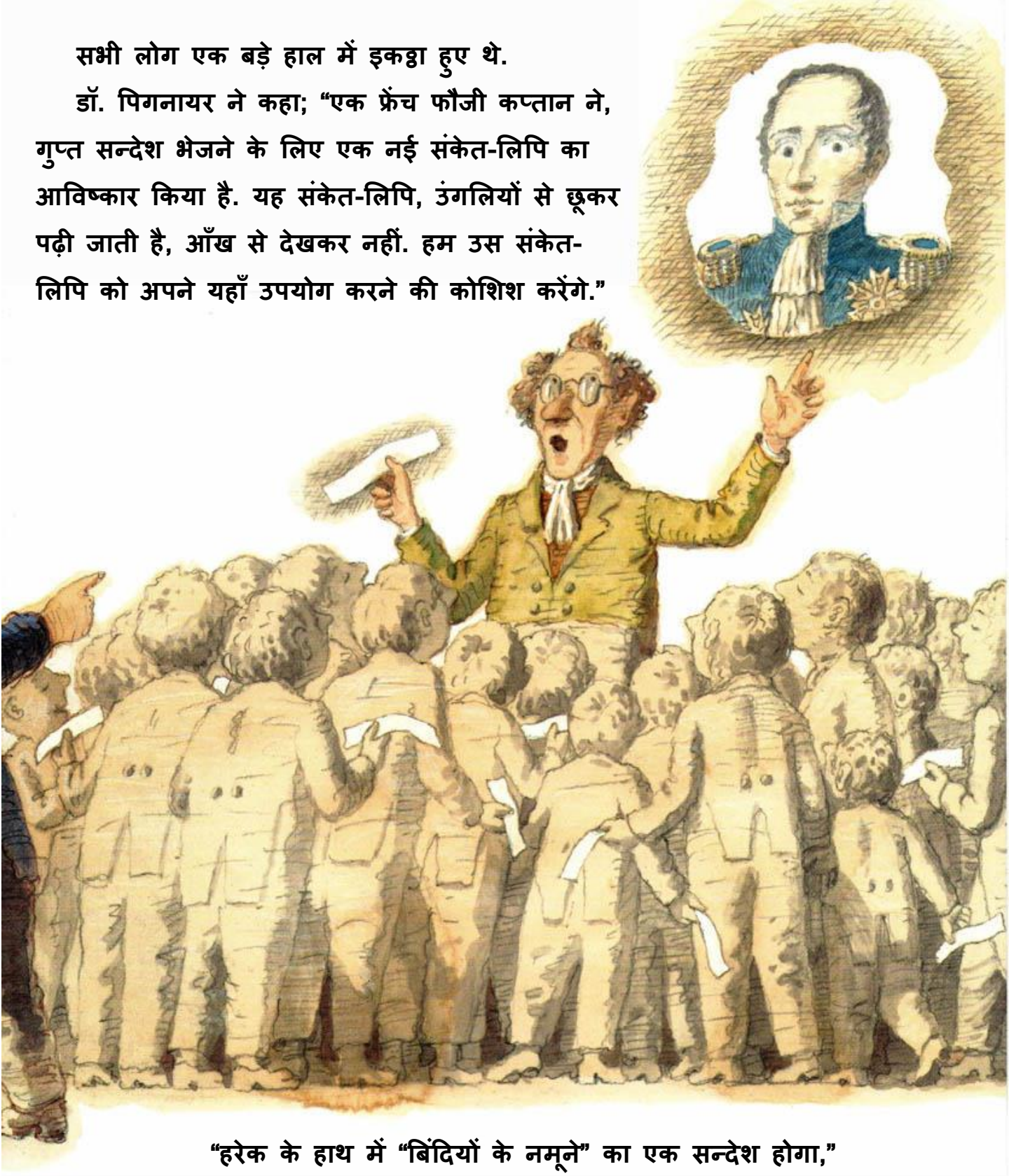

“हरेक के हाथ में “बिंदियों के नमूने” का एक सन्देश होगा,” हेडमास्टर ने अपनी बात ज़ारी रखी.

“हरेक “बिंदियों का नमूना” एक ध्वनि के लिए है जैसे – *“ओ”* या *“इन”* या *“च”* के लिए.

हम हेडमास्टर साहब की बातों को सुनते रहे.

वो कोई आसान काम नहीं था. उसमें बहुत कुछ रटना, याद करना पड़ता था. मैंने अपने हाथ के पन्ने को पलटा. फिर मैंने अपनी उँगलियों को बाएं से दायें फिराया और "बिंदियों" को छूकर महसूस किया.

"पीछे हटो!" मैं चिल्लाया. हरेक कोई हंसा. वो युद्ध में दिया जाने वाला एक आदेश था. बिल्कुल सही! अब मुझे कुछ उम्मीद नज़र आई. मेरा दिल तेज़ी से धड़कने लगा.

मैंने एक और सन्देश माँगा.

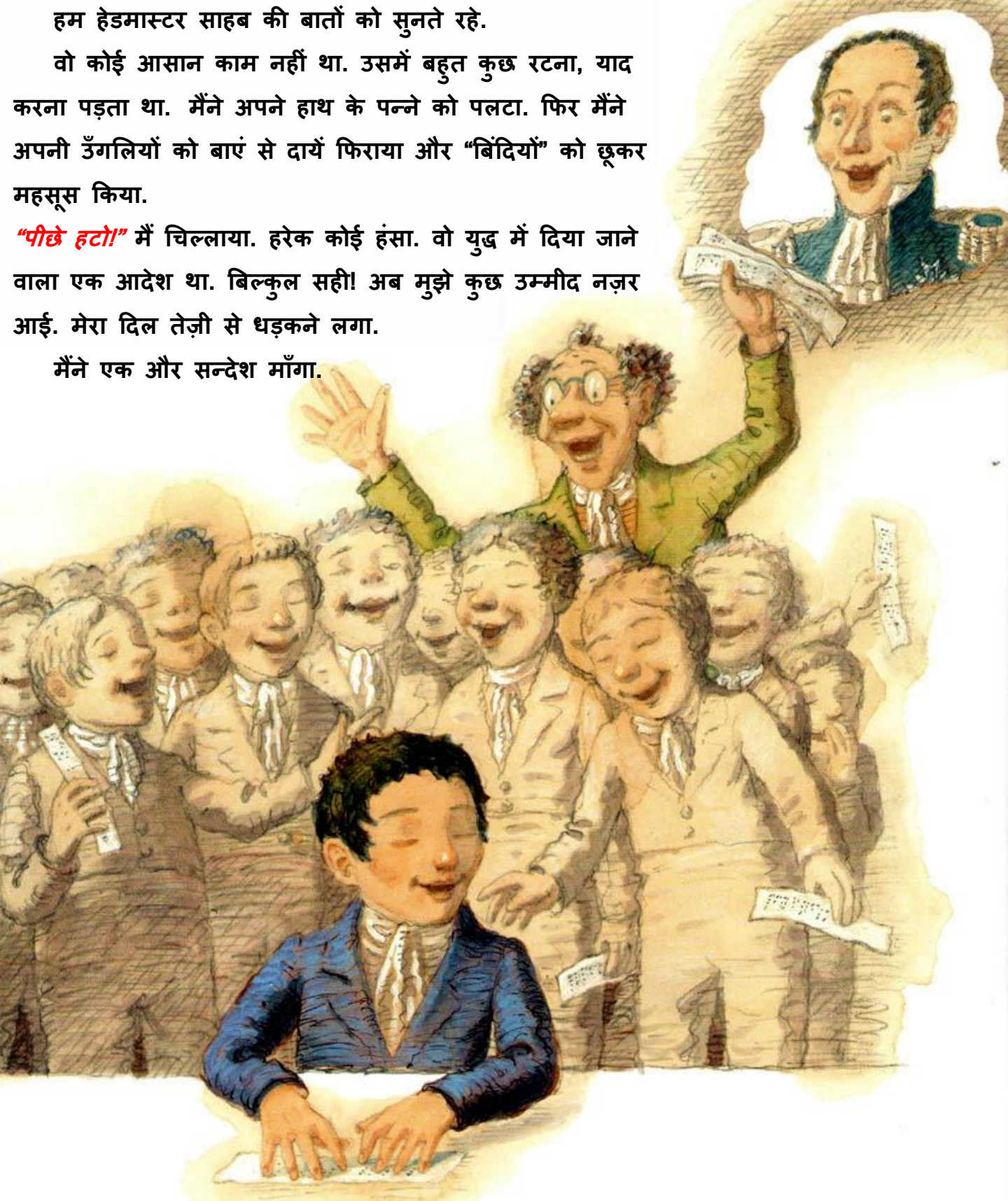

मैंने फिर से "बिंदियों" को छुआ. *"सप्लाई, सुबह को आएगी."*

"बिल्कुल ठीक!" हेडमास्टर साहब चिल्लाये.

फिर बाकी लोगों ने भी अपने-अपने सन्देश छूकर पढ़े.

“यह सन्देश कैसे लिखे जाते हैं?” मैंने पूछा.

हेडमास्टर ने मुझे एक स्लेट, और लकड़ी का एक फ्रेम दिया जिसके बीच में एक धातु की छेदों वाली पट्टी लगी थी. “इसके नीचे कागज़ के पन्ने को रखो,” उन्होंने समझाया.

“अच्छा यह लो लिखने वाला सूजा (स्टाइलस)... पर सावधानी बरतना!”

वो स्टाइलस बिल्कुल पापा की वर्कशॉप के सूजे जैसा था.

उसे छूकर मैं सहमा.

“सूजे से कागज़ पर अपने सन्देश को पंच करो,” उन्होंने कहा.

फिर मैंने सूजे से कागज़ पर कुछ कठिन और जटिल “बिंदियों” के नमूने बनाये.

उसके बाद मैंने कागज़ को पलटा और फिर “बिंदियों” को छूकर पढ़ा.

मैंने कई हफ्ते जमकर अभ्यास किया.

बिंदियों को छूकर पढ़ने का विचार, युद्ध में वाकई एक क्रांतिकारी हथियार था.

पर हम नेत्रहीनों के लिए, उसमें क्या था? संकेत-लिपि इतनी कठिन थी कि स्कूल के बाकी सब बच्चों ने उससे अपना पल्ला झाड़ लिया था.

एक छोटे से सन्देश के लिए भी इतनी सारी "बिंदियां" चाहिए होती हैं. एक भी चिन्ह मेरी ऊँगली के नीचे नहीं आता है!" मैंने गेब्रियल से शिकायत करते हुए कहा.

"साथ में कप्तान की संकेत-लिपि, ध्वनियों के लिए थीं, अक्षरों के लिए नहीं."

"तो क्या हुआ?" मेरे मित्र ने कहा.

"देखो, हम क्यूं न सीधे शब्द और पूरे वाक्य लिखें जैसे सामान्य दृष्टि वाले लोग करते हैं?" मैंने अपना तर्क पेश किया.

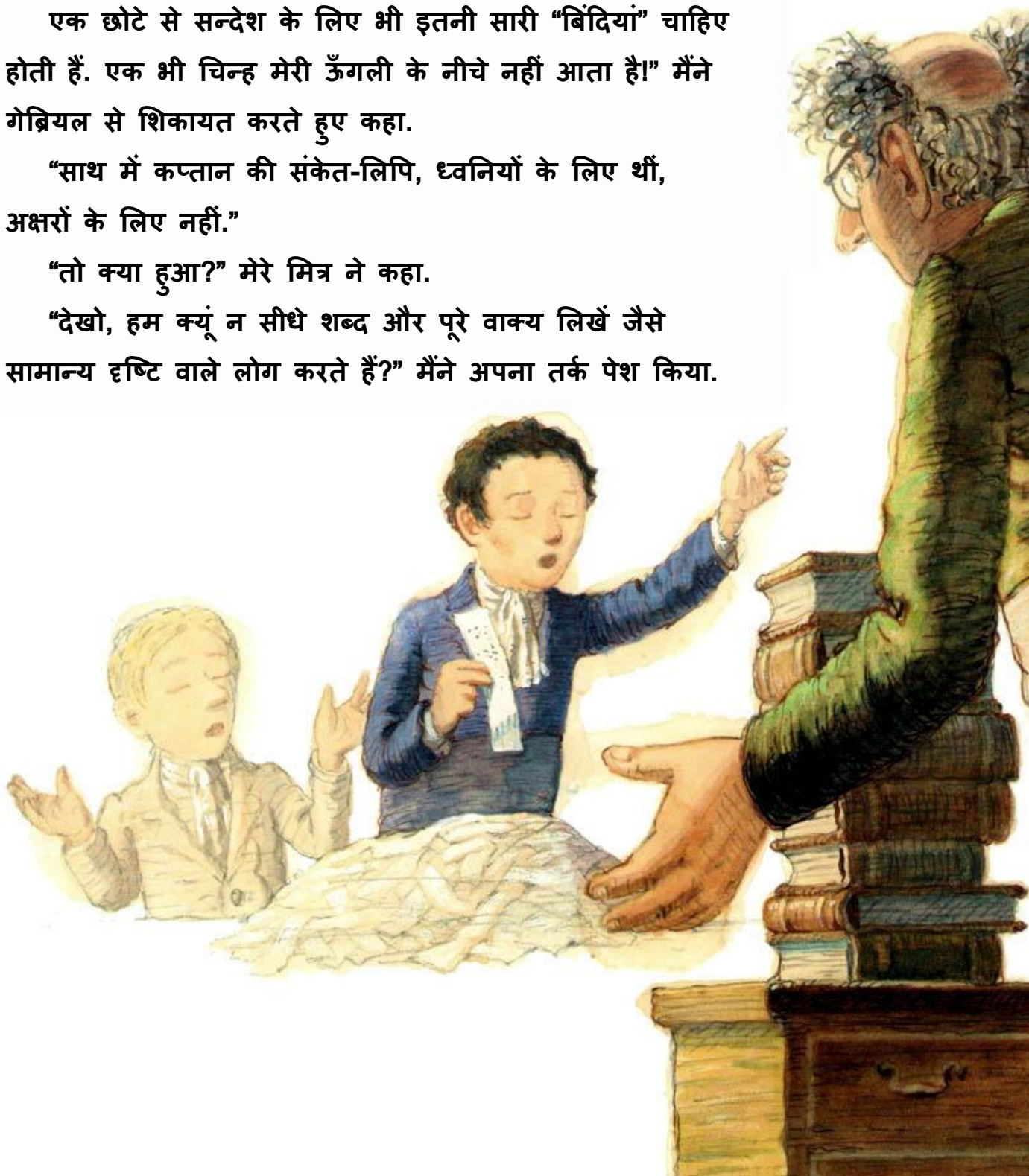

कप्तान की संकेत-लिपि तो बस एक शुरुआत थी. वैसे वो बहुत अच्छी नहीं थी.

हम – नेत्रहीनों के लिए तो उसमें कुछ भी नहीं था.

"क्या, कप्तान मेरे साथ मिलकर, इससे बेहतर तकनीक बनाने के लिए तैयार होंगे?" मैंने हेडमास्टर से पूछा.

"माफ़ी चाहता हूँ, लुई. कप्तान, की इसमें कोई रूचि नहीं होगी," उन्होंने उत्तर दिया.

माफ़ी .... वो शब्द!

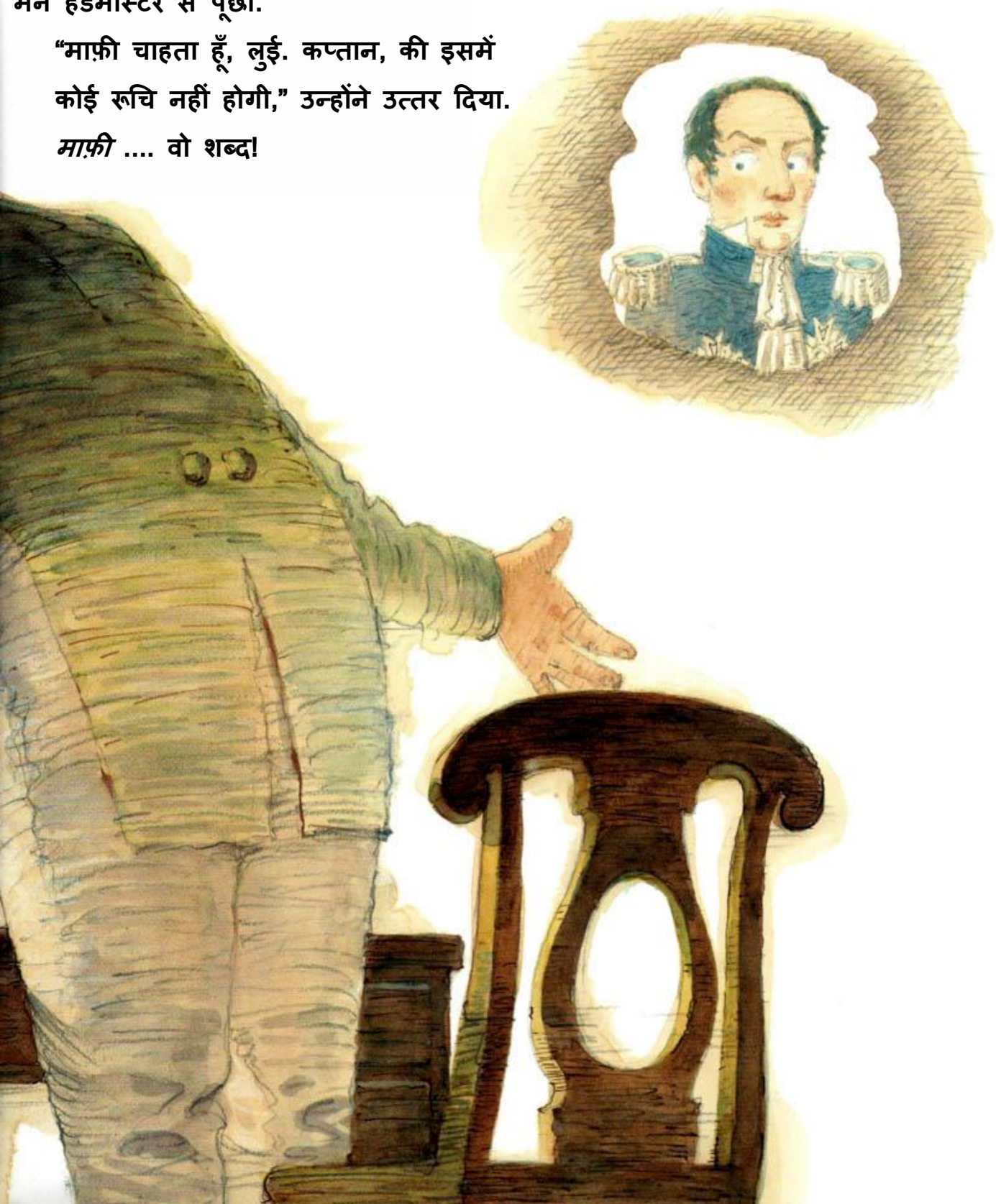

बहुत पहले मैंने पापा को चमड़े की खुरदुरी पट्टियाँ लेकर उन्हें उपयोगी बनाते देखा था.

अब आगे क्या करना है, वो मुझे पता था.

रात को जब सब लोग सो जाते, तो मैं अपनी स्लेट पर झुककर कागज़ के पन्नों को पंच करता था. कप्तान की संकेत-लिपि को सरल बनाने के मैंने सैकड़ों प्रयास किये.

काम करते-करते मेरी पीठ अकड़ जाती,

और मेरी उँगलियाँ दुखने लगती थीं.

अक्सर सुबह होने से कुछ पहले ही मैं सोता पाता था.

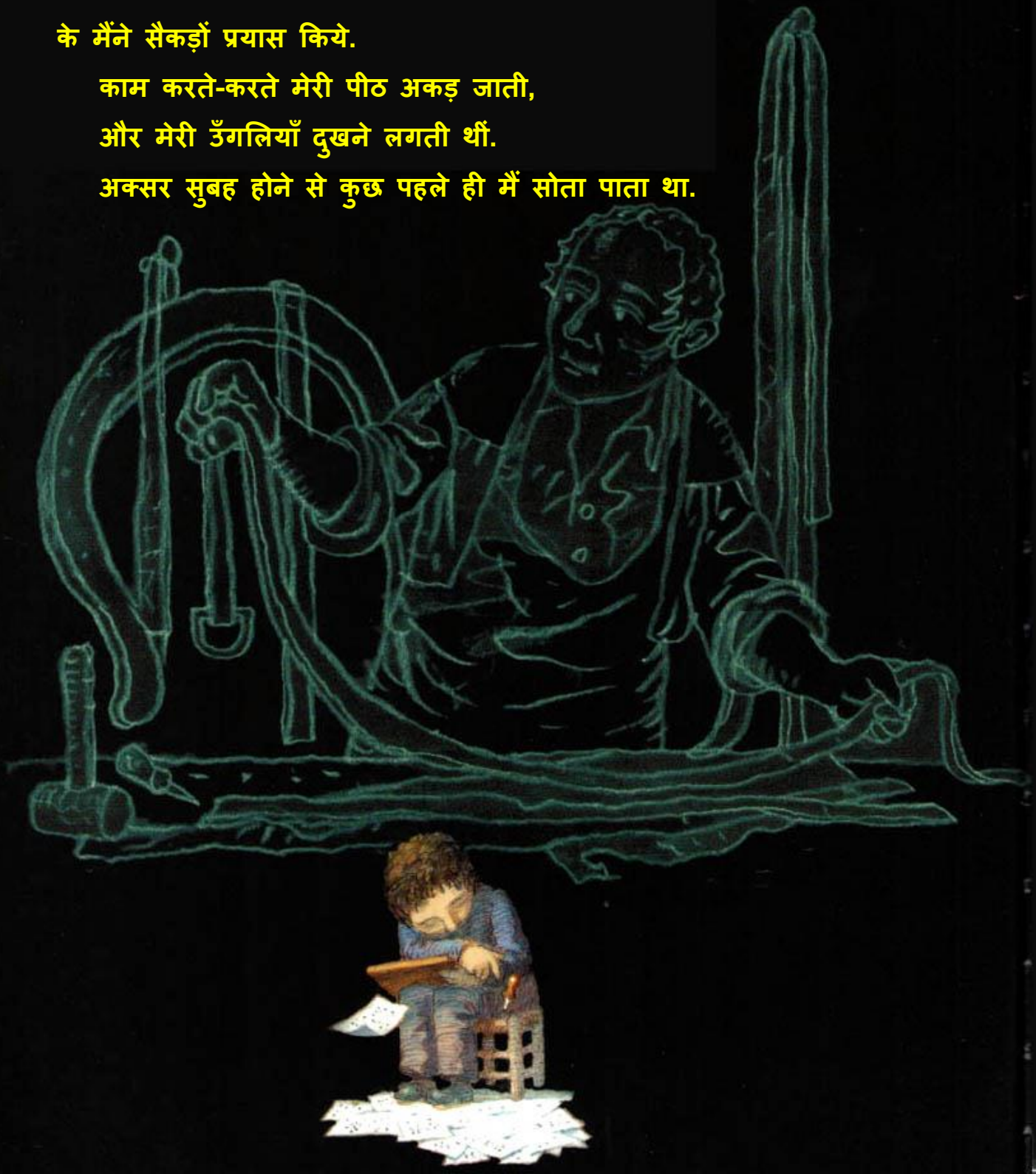

इस तरह एक साल बीता. फिर एक और.
फिर तीसरा. तब जाड़ों में मैं पंद्रह साल का हुआ.
मैं अक्सर बीमार रहता था.
पर फिर भी मैं आराम नहीं करता था.

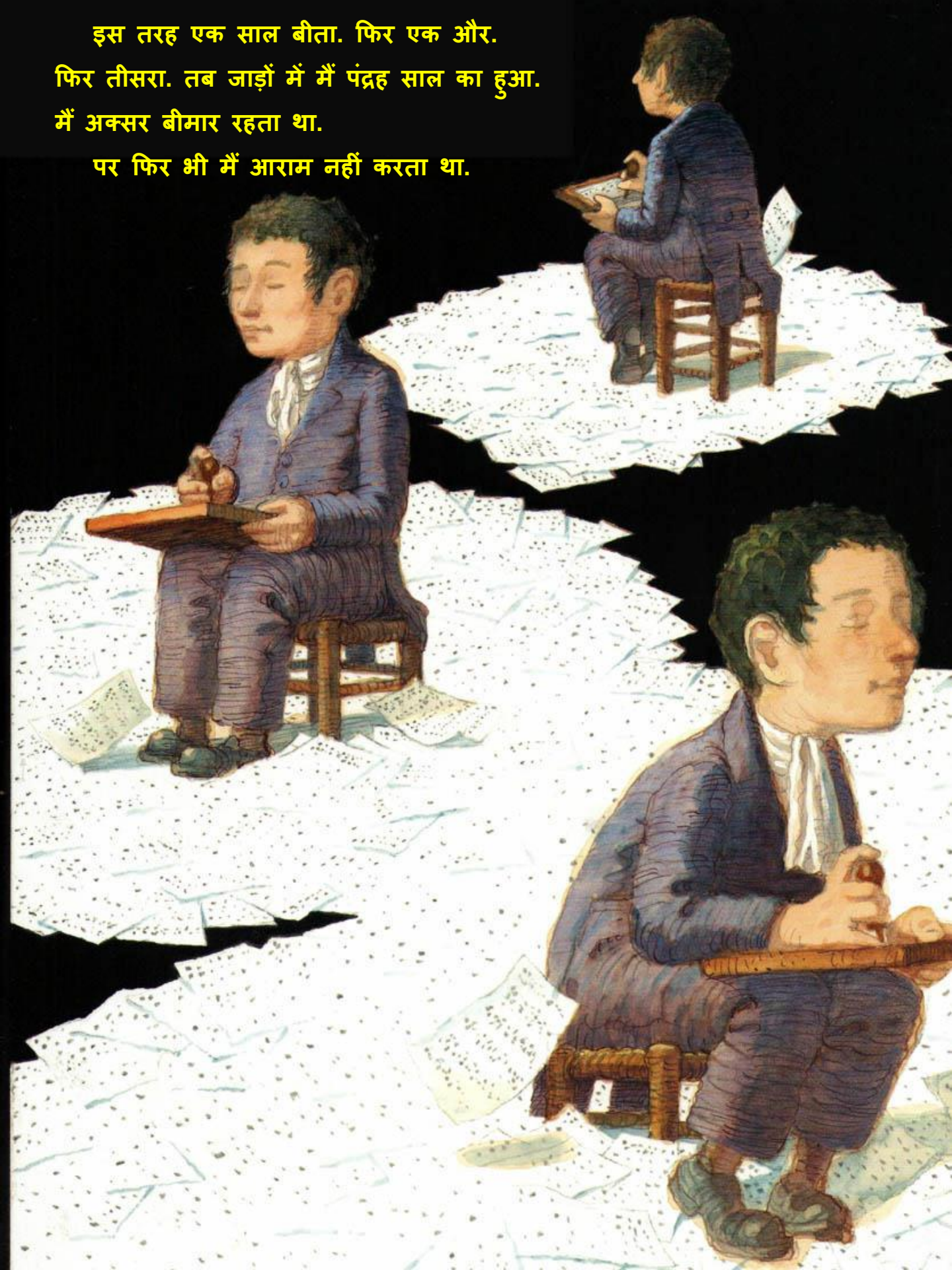

अंत में मेरी पद्धति के परीक्षण का दिन आया.

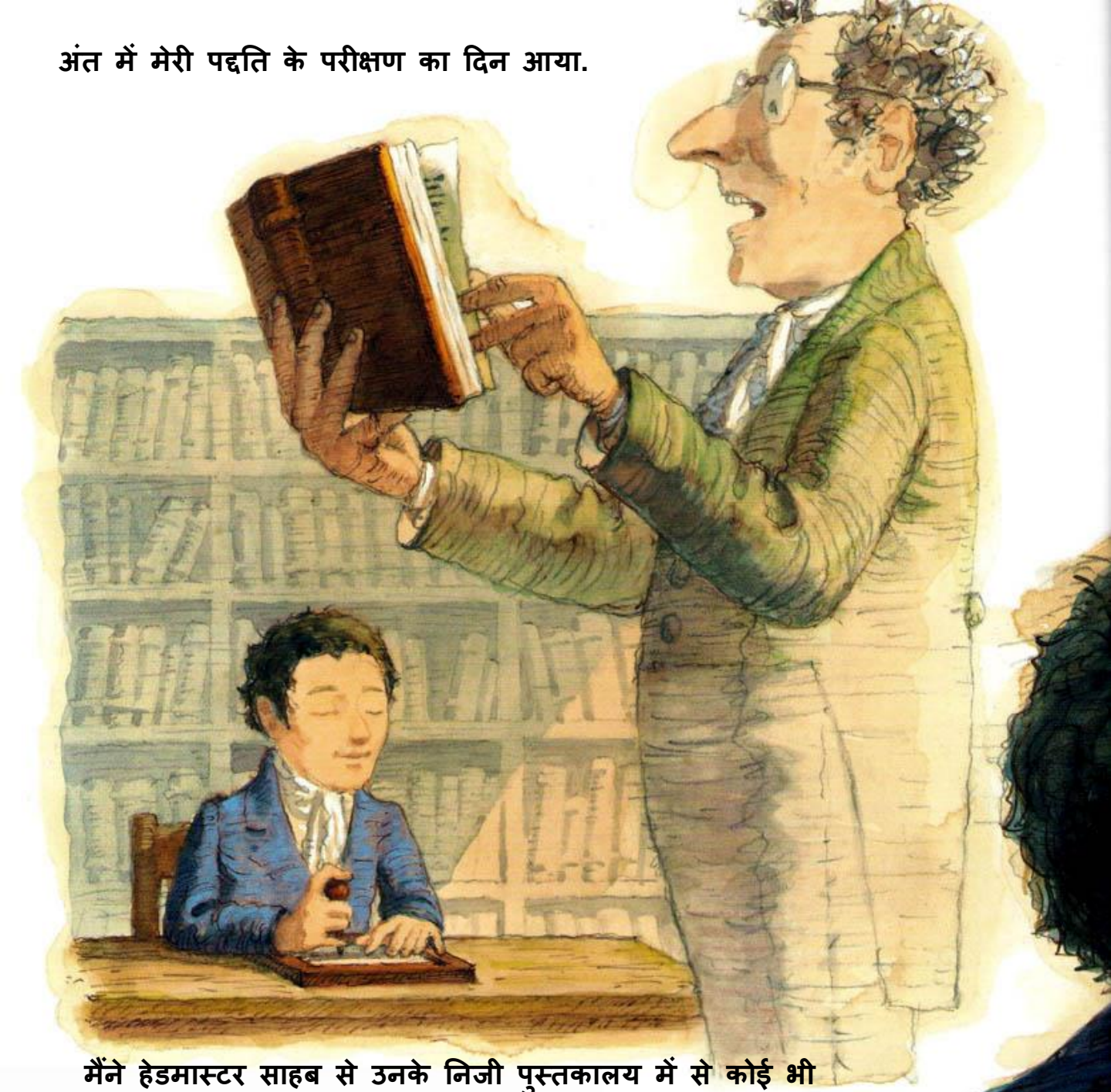

मैंने हेडमास्टर साहब से उनके निजी पुस्तकालय में से कोई भी पुस्तक लाने को कहा – जिसे मैंने पहले कभी देखा नहीं था.

“कृपाकर इसे ज़ोर से पढ़ें,” मैंने उनसे विनती की.

डॉ. पिगनायर ने पुस्तक को पढ़ना शुरू किया. कुछ मिनटों के बाद मैंने उन्हें रोककर कहा. “सर, आप ज़रा और तेज़ी से पढ़ें.” जैसे-जैसे उन्होंने पढ़ा, वैसे-वैसे मैंने उन शब्दों को उतारा, हरेक शब्द को बिना गलती किये उतारा.

मेरी नई संकेत-लिपि केवल छह बिंदियों का उपयोग करती थी.
उसमें "डोमिनो" जैसे बस, दो खड़ी लाइनें थीं.
हरेक बिंदी, वर्णमाला के एक अक्षर के लिए थी.
पूरा पाठ ख़त्म करने के बाद डॉ. पिगनायर ने कहा, "समाप्त!"

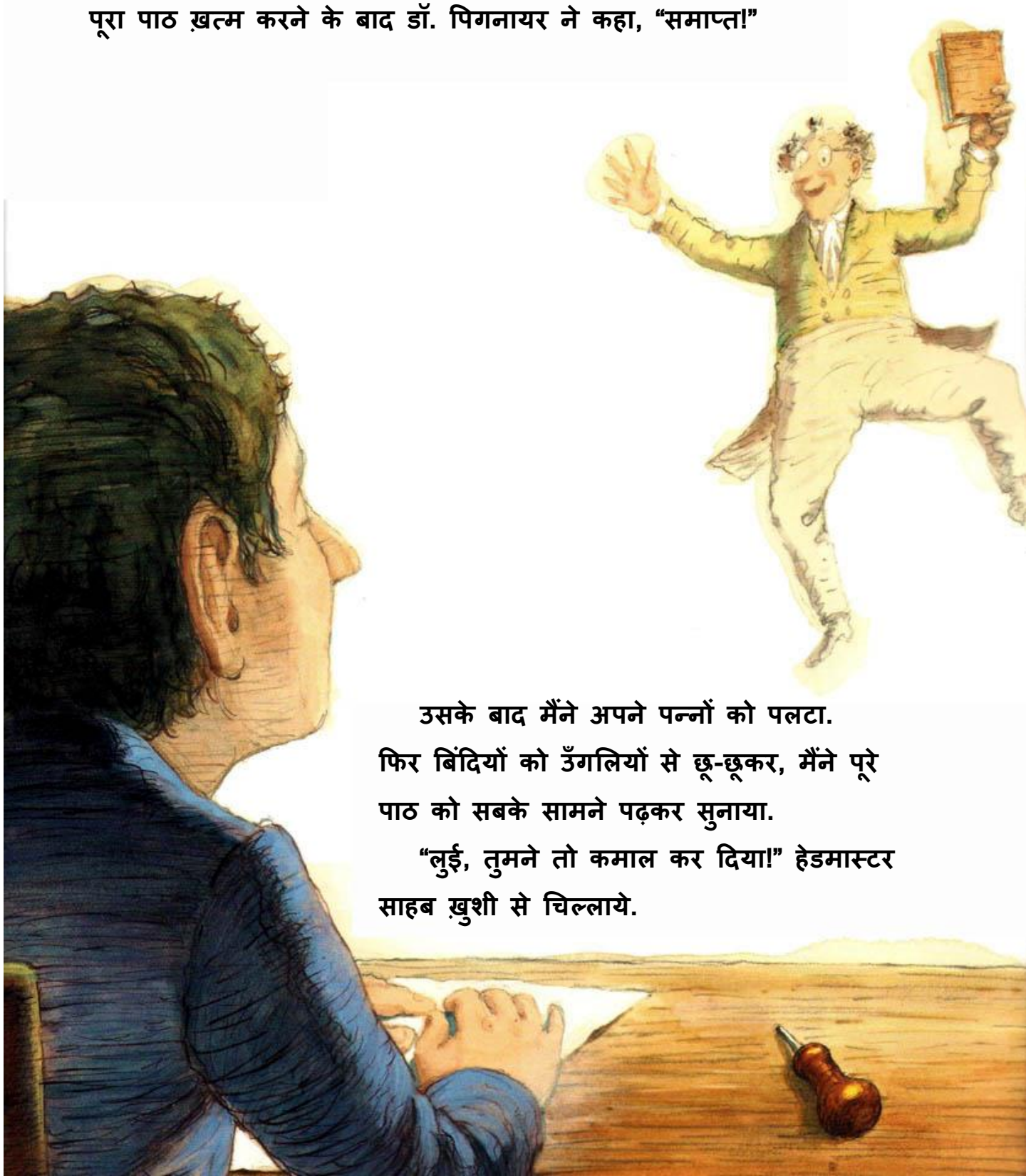

उसके बाद मैंने अपने पन्नों को पलटा.
फिर बिंदियों को उँगलियों से छू-छूकर, मैंने पूरे पाठ को सबके सामने पढ़कर सुनाया.

"लुई, तुमने तो कमाल कर दिया!" हेडमास्टर साहब ख़ुशी से चिल्लाये.

यह खबर चारों तरफ आग जैसे फ़ैली.

बाकी छात्रों ने भी फटाफट मेरे तरीके का परीक्षण किया.

“यह विधि तो वाकई में सरल है!” “और इतनी तेज़ भी!”

“अब हम आम लोगों की तरह ही, शब्द पढ़ सकते हैं और अक्षर लिख सकते हैं.”

जब मेरे दोस्तों ने नई विधि से एक-दूसरे को सन्देश भेजे, तो मुझे वर्कशॉप में बैठे अपने पापा की याद आई – जिन्होंने बेकार चमड़े की पट्टियों को, उपयोगी बनाया था.

अंत में मैंने भी उनके जैसा ही एक उपयोगी काम किया था!

लेखक का नोट

अगर तुमसे दुनिया के महान आविष्कारकों सूची बनाने को कहा जाए तो तुम उसमें किस-किस को शामिल करोगे? गुटेनबर्ग? दा विन्ची? एडिसन? उसके साथ में एलेग्जेंडर ग्रैहम बेल, फ्रेंक्लिन, मार्कोनी, टेस्ला, कार्वर, व्हिटनी, हॉपर – जैसे लोगों के नाम ज़रूर जुड़ेंगे – क्यूंकि उनके आविष्कारों का मानव-जाति पर बहुत प्रभाव पड़ा था.

पर क्या तुम्हें पता है कि रोज़ाना नियम से, चाहें तुम स्कूल में हो, या होटल में, लिफ्ट में, या बैंक में, या किसी सार्वजनिक स्थान पर हो, वहां पर एक नौजवान लड़के का आविष्कार तुम्हारे साथ ज़रूर होगा.

लुई ब्रेल का नाम, हर व्यक्ति के आविष्कारकों की सूची में ज़रूर होना चाहिए. औरों की तरह उसने भी एक अधूरे विचार को पकड़ा (युद्ध में उपयोगी संकेत-लिपि को) और उसपर बहुत श्रम करके उसे ऐसा रूप दिया जिससे दुनिया सदा के लिए बदल गई.

हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि ब्रेल एक युवा-आविष्कारक था जिसने किसी भी सार्वजानिक सहयोग और धन के बिना, अपना काम किया. फेफड़ों की बीमारी से ग्रस्त एक पुरानी जेल की इमारत में काम करके ब्रेल ने, नेत्रहीनों के लिए पढ़ने / लिखने की ऐसी नायाब विधि का इजाद किया जो आज भी उपयोग की जाती है. पिछली कई शताब्दियों में, इतनी कम उम्र में इतनी बड़ी खोज, जिसका प्रभाव दुनिया भर के करोड़ों लोगों पर पड़ा हो, किसी और ने नहीं की है.

लुई ब्रेल पर यह मेरी दूसरी किताब है. 1994 में मैंने युवा ब्रेल की एक जीवनी लिखी थी जो एक श्रंखला का हिस्सा थी – *विकलांगों की जीवनी*. उस किताब का मकसद लोगों को जानकारी देना था और उसमें वो सफल भी हुई. आज ब्रेल लिपि हमें चारों तरफ दिखती है – पुस्तकालयों में, कॉलेज में, एअरपोर्ट और एटीएम (ATM) मशीनों में. फिर मैंने खुद से एक सवाल पूछा – लुई ब्रेल ने खुद क्या महसूस किया होगा? जो कुछ भी मैंने ब्रेल के बारे में लिखा-पढ़ा था, उसमें कहीं भी ब्रेल की खुद अपनी भावनाओं का ज़िक्र नहीं था. लुई ब्रेल होने का, मतलब क्या था? इस पुस्तक में मैंने उस उत्तर को खोजने का प्रयास किया है.

लुई ब्रेल में बारे में कुछ और :

प्रश्न: लुई ब्रेल का अविष्कार इतना महत्वपूर्ण क्यूं था?

उत्तर: हेलेन केलर ने ब्रेल की तुलना गुटेनबर्ग (प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कारक) से की है. गुटेनबर्ग से पहले, बहुत कम लोग ही पढ़ना-लिखना, सीखते थे. करोड़ों लोग लिखने-पढ़ने के बारे में सोच भी नहीं सकते थे. पर छापेखाने के आविष्कार के बाद हरेक को पुस्तकें उपलब्ध हुईं – जिससे लोगों को सीखने की आज़ादी, और अपना जीवन बेहतर करने की स्वतंत्रता मिली. यही बात लुई ब्रेल के अविष्कार पर भी लागू होती है. ब्रेल से पहले नेत्रहीनों के पास लिखने-पढ़ने का कोई जरिया नहीं था. पर ब्रेल की विधि ने उसे हमेशा के लिए बदल दिया.

प्रश्न: ब्रेल के परिवार ने उसकी ओर सहानभूति दिखाई. क्या वो परिवार अनूठा था?

उत्तर: हाँ, वो परिवार, वाकई में अनूठा था. 1800 में, कोई परिवार तभी ज़िन्दा रह पाता था जब उसके सब सदस्य अपना-अपना काम करते थे. अंधे, बहरे, और विकलांग बच्चों को अक्सर त्याग दिया जाता था या किसी घुमंतू संगीतकार को सौंप दिया जाता था जो उसे नाच-गाना, सर्कस के करतब या फिर भीख मांगना सिखाता था. लुई को ऐसे भविष्य से बचाने के लिए उसके परिवार ने, उसे पढ़ाने और स्वतंत्र बनाने की पूरी कोशिश की.

प्रश्न: अपने पहले प्रदर्शन के बाद ब्रेल ने अपनी विधि में क्या-क्या बदल की?

उत्तर: शुरू में ब्रेल ने कप्तान चार्ल्स बर्बिएर की संकेत-लिपि के कुछ अंश इस्तेमाल किये. पर लुई उन्हें लगातार शुद्ध और बेहतर बनाता रहा. उसने कप्तान की लिपि में से बहुत सी चीज़ें निकालकर नई चीज़ें जोड़ीं. 1829 में, पांच साल बाद ब्रेल ने, डॉ. पिगनायर को दुबारा अपनी विधि दिखाई. उसपर ब्रेल ने एक किताब भी लिखी. ब्रेल ने पुस्तक में जिस विधि का वर्णन किया, लगभग वही तरीका आज भी इस्तेमाल किया जाता है.

प्रश्न: ब्रेल लिखने और पढ़ने की पद्दति को आधिकारिक तौर पर कब लागू किया गया?

उत्तर: पेरिस में स्थित रॉयल इंस्टिट्यूट फॉर ब्लाइंड यूथ, ने ब्रेल की पद्दति का तुरंत इस्तेमाल करना शुरू कर दिया पर आधिकारिक तौर पर उसे 1854 में (ब्रेल की मृत्यु के दो साल बाद) ही लागू किया गया. तब तक ब्रेल का उपयोग पूरे यूरोप और उत्तरी अमरीका में फ़ैल चुका था. उसका औपचारिक क्रियान्वन कुछ धीरे हुआ. यूरोप में ब्रेल पद्दति तेज़ी से फ़ैली. अमरीका में औपचारिक रूप से ब्रेल पद्दति 1932 में ही स्वीकारी गई.

प्रश्न: ब्रेल ने और क्या अविष्कार किए?

उत्तर: संगीत, गणित और नक्शों के बारे में सीखने के लिए ब्रेल का कैसे उपयोग किया जाए, इस विषय पर लुई ने पुस्तकें लिखीं. अपने मित्र अलेक्सांद्रे फ़ौर्नीएर की मदद से उसने "रैपिग्राफी" का अविष्कार किया. उसे "डेकापॉइंट" भी कहते हैं. इस प्रणाली द्वारा नेत्रहीन और सामान्य लोग, एक-दूसरे को लिख सकते थे. एक नेत्रहीन संगीतज्ञ और मैकेनिक पिअर फौकोल्ट की मदद से ब्रेल ने "रैपिग्राफी" के लिए एक टाइपराइटर जैसी मशीन का अविष्कार किया. इसी मशीन के आधार पर बाद में, *डॉट-मैट्रिक्स प्रिंटर* बने.

प्रश्न: संगीत का ब्रेल की ज़िन्दगी में क्या रोल रहा?

उत्तर: लुई ने चेलो और ऑर्गन जैसे वाद्ययंत्र बजाना सीखे. ऑर्गन बजाने में वो एक प्रोफेशनल था. वो नियमित रूप से पेरिस के दो प्रमुख चर्चों में ऑर्गन बजाता था. वो अपने गाँव के पास लोगों के पियानो "ट्यून" भी करता था. संगीत, नेत्रहीन लोगों के लिए एक अच्छा पेशा था, और सामान्य लोगों को उससे कोई आपत्ति भी नहीं थी. लुई ने संगीत को, ब्रेल-लिपि में लिखने की पद्धति विकसित की. इस कारण उसकी संगीत-लिपि बहुत तेज़ी से दूर-दूर फैली.

प्रश्न: लुई ने अपनी शिक्षा समाप्त करने के बाद क्या किया?

उत्तर: अपनी शिक्षा समाप्त करने के बाद लुई ब्रेल, रॉयल इंस्टिट्यूट फॉर ब्लाइंड यूथ, में असिस्टेंट टीचर बन गया. 1833 में वो फुल प्रोफेसर बना और उसने वहां इतिहास, व्याकरण, भूगोल और गणित के विषय पढ़ाये. तेपेदिक (टी.बी.) से बीमार होने के बावजूद वो पढ़ाता रहा. आराम के लिए वो कभी-कभी अपने परिवार के पास भी जाता था. 43 वर्ष की अल्पायु में, उसका देहांत हुआ और उसे उसके गाँव (Coupvray) में ही दफनाया गया. मृत्य के सौ साल बाद 1952 में, उसके मृत देह को, पेरिस के पन्थेओन (Pantheon) में लाकर दफनाया गया. पन्थेओन वो स्थान है जहाँ फ्रांस के सबसे प्रसिद्ध लोगों को दफनाया जाता है.

प्रश्न: डिजिटल युग के आगमन के बाद ब्रेल-विधि में क्या बदलाव आया?

उत्तर: टेक्नोलॉजी में तरक्की के कारण अब नेत्रहीन लिखने और पढ़ने के लिए अनेक किस्म के उपकरण उपयोग कर सकते हैं. पर इन उपकरणों को नेत्रहीनों तक पहुँचाना, अभी भी एक चुनौती है. अमेरिकन फाउंडेशन फॉर द ब्लाइंड, नेशनल फेडरेशन फॉर द ब्लाइंड और नेशनल लाइब्रेरी सर्विस, नेत्रहीनों और विकलांगों की कुछ ज़रूरतों को पूरा करने की कोशिश करती हैं. इसके कुछ उदाहरण हैं – *ब्रेल-नोट-टेकर*– जो परम्परगत स्लेट और स्टाइलस का विकल्प हैं. *ब्रेल-डिस्प्ले* मशीनें जो कंप्यूटर स्क्रीन की चीज़ों को, ब्रेल में प्रस्तुत करती हैं. *ब्रेल-प्रिंटर्स*, कंप्यूटर में रखीं किताबों को ब्रेल में प्रिंट करते हैं. *डिजिटल-पुस्तकालय* के ज़रिये लोग ब्रेल और ऑडियो पुस्तकें / पत्रिकाएं उधार ले सकते हैं. अब स्मार्टफोन और टेबलेट्स लिखित सामग्री को, ब्रेल या ऑडियो में आसानी से परिवर्तित करते हैं.

लुई ब्रेल पढ़ना चाहता था. पर उस समय नेत्रहीन बच्चों के लिए कोई पुस्तकें नहीं थीं. तब लुई ने एक लिपि का अविष्कार किया जिसे छूकर पढ़ा जा सकता था. इसमें हर अक्षर, छह उभरी बिंदियों से मिलकर बनता था. अब पूरी दुनिया भर की किताबों को वो अपनी उंगली से छूकर पढ़ सकता था .....